चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र
1st July '56
6
as

Photo by S. N. Somani

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

" रंग रंगीले मेरे हाथ ! "

प्रेषक :
श्री ललन प्रसाद सिंह, जमशेदपुर

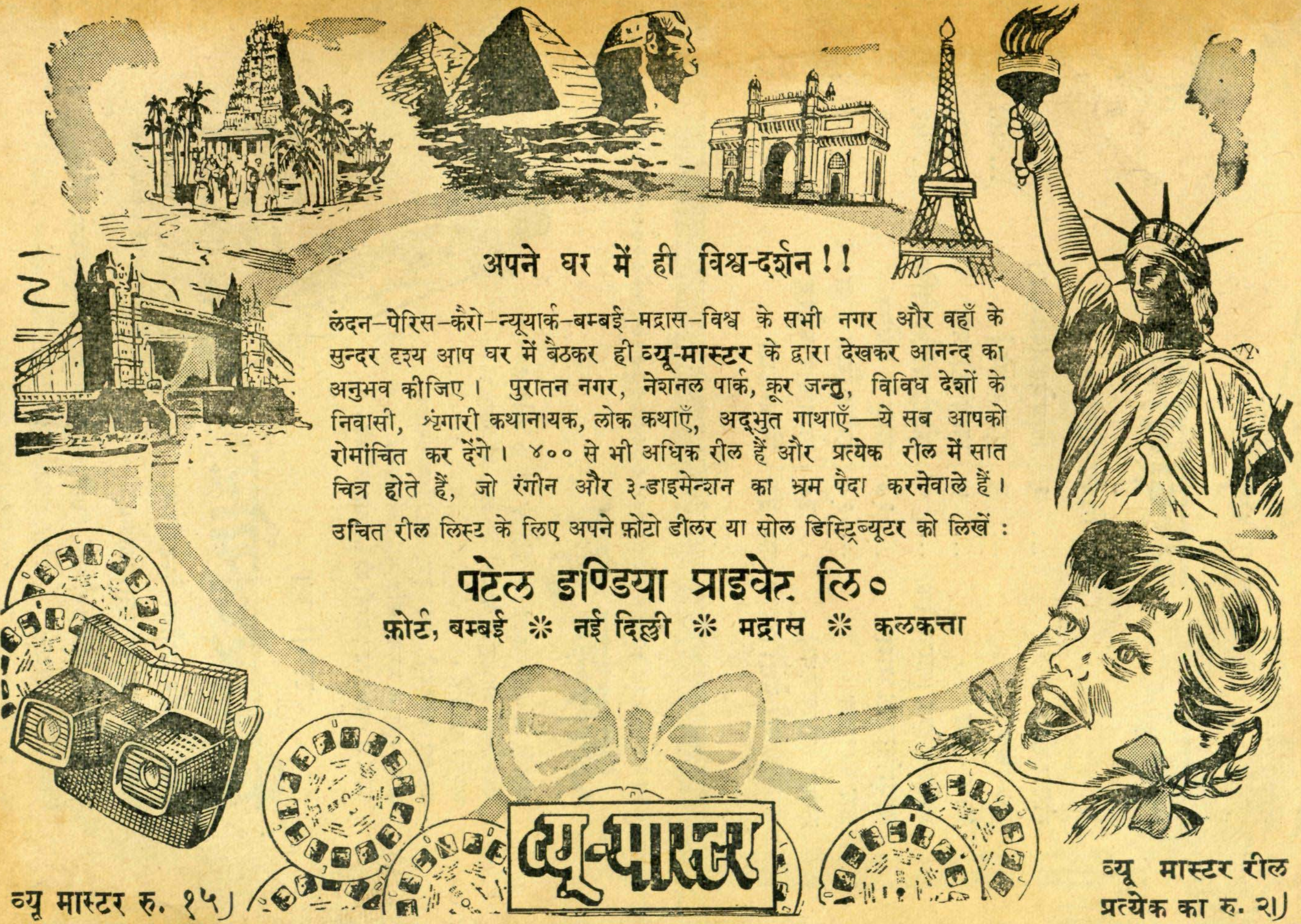
अपने घर में ही विश्व-दर्शन!!
लंदन–पेरिस–कैरो–न्यूयार्क–बम्बई–मद्रास–विश्व के सभी नगर और वहाँ के सुन्दर दृश्य आप घर में बैठकर ही व्यू-मास्टर के द्वारा देखकर आनन्द का अनुभव कीजिए। पुरातन नगर, नेशनल पार्क, क्रूर जन्तु, विविध देशों के निवासी, शृंगारी कथानायक, लोक कथाएँ, अद्भुत गाथाएँ—ये सब आपको रोमांचित कर देंगे। ४०० से भी अधिक रील हैं और प्रत्येक रील में सात चित्र होते हैं, जो रंगीन और ३-डाइमेन्शन का भ्रम पैदा करनेवाले हैं।
उचित रील लिस्ट के लिए अपने फ़ोटो डीलर या सोल डिस्ट्रिब्यूटर को लिखें :
पटेल इण्डिया प्राइवेट लि०
फ़ोर्ट, बम्बई * नई दिल्ली * मद्रास * कलकत्ता
व्यू-मास्टर
व्यू मास्टर रु. १५)
व्यू मास्टर रील प्रत्येक का रु. २)

चन्दामामा

विषय-सूची

संपादकीय	...	१
मुख-चित्र	...	२
मित्र - प्रेम	...	४
भयंकर देश (धारावाहिक)	...	९
वायुमंडल के भाग	...	१७
जय पराजय	...	१८
कृतघ्न (जातक कथा)	...	३०
चालाक माँ-बेटी (धारावाहिक)		३३
मित्रभेद (पद्य-कथा)	...	४१
बताओगे ?	...	४४
अन्धे की अक्ल	...	४५
फ़ोटो परिचयोक्ति	...	४९
जादू के प्रयोग	...	५०
रंगीन चित्र-कथा - ६	...	५२
समाचार वग़ैरह	...	५४
चित्र-कथा	...	५६

आपका पुत्र...

आँकड़ों से पता चलता है कि १ से ३ वर्ष की अवस्थावाले शाकाहारी बालकों में यकृत की खराबी अकसर रहती है।

बार-बार बदहजमी, बढ़ा हुआ पेट, चिड़चिड़ापन, क्रोध, भूख न लगना आदि यकृत की खराबी के लक्षण हैं। समय रहते जम्मी की सहायता लीजिये।

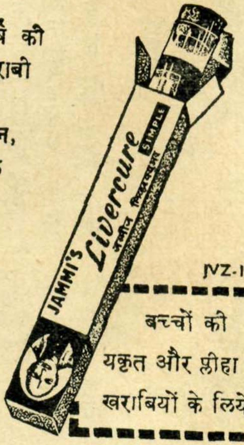

JVZ-13 HIN

बच्चों की यकृत और प्लीहा की खराबियों के लिये

जम्मी का

लिवरक्योर

जम्मी वेंकटरामानैया ऐन्ड सन्स,

'जम्मी बिल्डिंग्स' मायलापुर, मद्रास-४

शाखायें: बम्बई: 'पारेख मैन्सन' सरदार वल्लभाई पटेल रोड और किंग्स सर्कल सायन रोड। कलकत्ता: १३२/१, हरीसन रोड। दिल्ली: ४ए, कमला नगर। लखनऊ: जदुनाथ सान्याल रोड। नागपुर: २७३ मोहन नगर।

मल्टीकलर

फ़ोटो आफ़सेट प्रिंटिंग् में
प्रोसेस ब्लाक् मेकिंग में—

आधुनिक मेशीनरी,
अनुभवी टेक्नीशियन
कुशल कलाकार और

३०" × ४०" के कैमरे की
सहायता से सदा ऊँचा स्तर
निभानेवाली दक्षिण भारत की
एक मात्र संस्था है :

प्रसाद प्रोसेस (प्राइवेट) लि०

चन्दामामा बिल्डिंग्स,
वड़पलनी :: मद्रास - २६.

ये सस्ते 'कोडक' कैमरे

चित्र खींचना बिलकुल आसान बना देते हैं!

यह ज़रूरी नहीं कि एक बढ़िया 'कोडक' कैमरा क़ीमती ही हो। इनमें से किसी भी मॉडल से आप सुन्दर व स्पष्ट चित्र खींच सकते हैं। यहाँ चुने हुए कुछ ऐसे कैमरे दिये गये हैं जो इस्तेमाल में बिलकुल आसान और नौसिखियों के लिए आदर्श हैं। किसी हेर-फेर की ज़रूरत नहीं। लैंसों को पहले से ही कारखाने में सही फ़ोकस पर बैठा दिया जाता है। इसीलिए तो ये कैमरे इस्तेमाल में इतने आसान हैं। और फिर इनका मूल्य भी बहुत ही उचित रखा गया है। अपने विक्रेता के पास विविध प्रकार के 'कोडक' कैमरे देखिए। वह आपके लिए सही प्रकार का कैमरा चुनने में मदद भी पहुँचाएगा।

'ब्राउनी' १२७ कैमरा

इस्तेमाल में सबसे आसान और सबसे सस्ता। बड़े स्पष्ट व्यूफ़ाइण्डर में से लक्ष्य निर्धारित कर बटन दबाभर दीजिए। 'कोडक' १२७ फ़िल्म पर ८ सुन्दर चित्र रु० १७/८

केनवास केस रु० ३/४

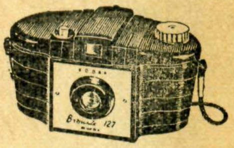

कोडक 'ड्युआफ़्लैक्स' II कैमरा

यह सुन्दर कैमरा इस्तेमाल में बिलकुल आसान है। व्यूफ़ाइण्डर में से लक्ष्य कर बटन दबाभर दीजिए। 'कोडक' ६२० फ़िल्म पर १२ स्पष्ट चित्र खिंचते हैं। घर में चित्र खींचने के लिए एक 'कोडक' फ़्लैशहोल्डर जोड़ दीजिए। रु० ५६/-

चमड़े का केस रु० १२/-

फ़्लैशहोल्डर रु० २२/१२

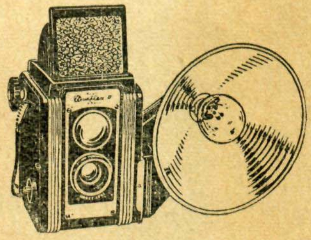

स्पष्ट और सुन्दर चित्रों के लिए

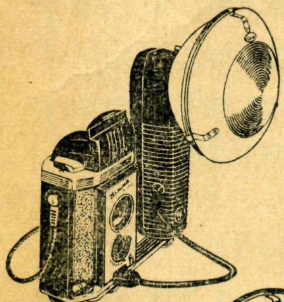

‘ब्राउनी’ रिफ़्लैक्स कैमरा

इस कैमरे का व्यूफ़ाइण्डर विशेषरूप से बड़ा है जिससे आप चित्र को खींचने से पहले ही उसे क़रीब-क़रीब पूरे आकार में देख सकते हैं। कोई हेर-फेर नहीं करनी पड़ती . . . लक्ष्य कीजिए और चित्र खींचिए। घर में चित्र खींचने के लिए एक ‘कोडक’ फ़्लैशहोल्डर जोड़ दीजिए। केस के साथ रु० ४५/-

फ़्लैशहोल्डर रु० २६/-

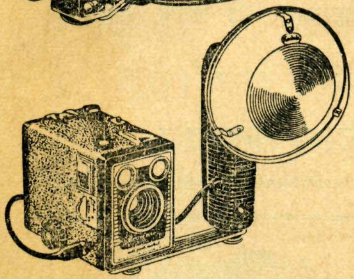

छः-२० ‘ब्राउनी’ कैमरे

इन लोकप्रिय कैमरों से सुन्दर और स्पष्ट चित्र खिंचते हैं। मॉडल डी में क्लोज़-अप लैंस जुड़ा रहता है; मॉडल ई में क्लोज़-अप लैंस और अधिक सुन्दर बाहरी चित्रों के लिए कलर-फ़िल्टर होते हैं। मॉडल एफ़ देखने में बिलकुल अनूठा है—कत्थई-भूरे रंग की बनावट, पीतल के व्यूफ़ाइण्डर-फ्रेम, पीतल की ही जड़ाई।

मॉडल सी	रु० २४/-
मॉडल डी*	रु० २६/-
मॉडल ई*	रु० ३४/-
मॉडल एफ़*	रु० ३६/८
*फ़्लैशहोल्डर	रु० २६/-

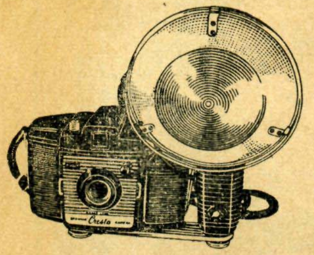

ब्राउनी ‘क्रेस्टा’ कैमरा

इस आकर्षक कैमरे द्वारा आसानी से सुन्दर स्नैप-चित्र खिंचते हैं। शटर या लैंस को जमाने या सही फ़ोकस करने की कोई झंझट नहीं। एक ‘कोडक’ फ़्लैशहोल्डर जोड़कर आप घर के भीतर या अँधेरा होजाने पर भी चित्र खींच सकते हैं। कैमरे में ‘क्लाउड-फ़िल्टर’ और क्लोज़-अप लैंस भी होते हैं। ब्राउनी ‘क्रेस्टा’ कैमरे से १२० ‘कोडक’ फ़िल्म पर २¼×२¼ इंच आकार के १२ सुन्दर चित्र खिंचते हैं। रु० २६/८

फ़्लैशहोल्डर .. .. .. रु० २६/-

दामों में बिक्री-कर शामिल नहीं है

कोडक लि० (इंग्लैण्ड में सम्बद्ध। कंपनी के सदस्यों का दायित्व सीमित है) बम्बई-कलकत्ता-दिल्ली-मद्रास.

‘कोडक’ फ़िल्म इस्तेमाल कीजिए!

Gitco MOUNTS

उत्तम प्रकार के
फ़ोटोग्राफ़िक माउण्ट्स
फ़ोल्डर्स, अल्बम्स, कॉर्नर्स
तथा फ़ोटोग्रफ़ी सम्बंधी सभी सामानों
के बनाने तथा बेचनेवाले

★

दि ग्रेट इंडिया ट्रेडिंग कं.

२७/३३ मेडोज़ स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई-१.

★

ग्राम-PHOTO BOARD

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना !

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न हो, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते के साथ सूचना देनी चाहिए। प्रति नहीं पाई, तो १० वीं के पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, चन्दामामा.

आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण के लिए

नौजवानों की बड़ी आवश्यकता है। अगर ऐसी माताओं की भी आवश्यकता हो, जो ऐसे नौजवानों को उत्पन्न कर सके, तो महिलाओं के सेवन के लिये है:

लोध्रा

गर्भाशय के रोगों का नाशक।
केसरी कुटीरम् लिमिटेड
१५ वेस्टकाट रोड़, रायपेट,
मद्रास-१४.

केसरि कुटीरम् लि • मद्रास.14

हमेशा अच्छी कलम के लिए
आग्रह कीजिए। वह है:

चेम्पियन

यह हर जगह मिलनेवाली
उत्तत कलम है।

दाम रु. ३-८-० से लेकर

★

गुजरात इन्डस्ट्रीज़, बम्बई-२

Champion

The Choice of all

प्रेसीडेन्ट

टाइलेट टेबुल की
एक सम्पत्ति:

प्रेसीडेंट वेज़ीटबुल हेयरआइल अच्छे केशों की वृद्धि करता है।

प्रेसीडेंट स्नो रमणीयतापूर्ण सौन्दर्य प्रदान करता है।

प्रेसीडेंट टाल्कम पाउड्र के उपयोग से रंगरूप आकर्षणीय बन जाता है।

RATHOD TRADING CO · SOWCARPET · MADRAS · 1

यह नया 'गेवाबक्स' अत्यन्त आकर्षणीय छोटा कैमरा है। धातु के ढाँचे के गोल किनारे... अच्छा दानेदार रेक्सीन अस्तर... चमकदार पालिश के फ़िटिंग्स... सुन्दर आकार का व्यू फ़ाइण्डर—ये सब मिलकर इस नये 'गेवा बक्स' को मूल्यवान बना देते हैं। फिर भी इसका मूल्य केवल रु. २९)है।

विशेष आकर्षण :

- शटर तीन गतियों से चलता है—बी. १/५० तथा १/१००. शटर पर तार संचालित साकेट और स्टेण्डर्ड फ्लैश कांटाक्ट दिये गये हैं।
- किसी भी प्रकार का फ्लैश इस कैमरे में लग सकता है।
- बाजू में आसान सिटकनी के घुमाने से कैमरा आसानी से खोला या बन्द किया जा सकता है।
- फ़िल्म घुमाने के पहिये में धारीदार किनारे हैं, जिससे जल्दी घुमाने में आसानी हो।
- फ़िल्म की संख्या बतानेवाली खिड़की पर बचाव के लिए सरकनेवाला ढक्कन है।

अपने 'गेवाबक्स' में गेवापान ३३° या ३६° इस्तेमाल करें।

'GEVABOX'

ALLIED PHOTOGRAPHICS PRIVATE LIMITED

एलाएड फ़ोटोग्राफ़िक्स प्राइवेट लिमिटेड

कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी ताता रोड़, बम्बई–१

रेडियो सिलोन (४१ मीटर बेंड) पर ए. पी. एल. का **'फ़ोटो मेला'** प्रति बृहस्पतवार को रात को ८-० बजे सुनिए।

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम पिछले कुछ महीनों से "चालाक माँ बेटी" की कहानी धारावाहिक रूपसे प्रकाशित कर रहे थे। हमें पाठकों के पत्र से ज्ञात हुआ है कि कहानी उनको रोचक लगी।

"चालाक माँ बेटी" की कहानी इस मास समाप्त हो रही है। पर हम पाठकों को निराश होने का मौका न देंगे।

हम अगले महीने से एक ऐसी धारावाहिक कहानी प्रकाशित करेंगे, जो "चालाक माँ बेटी" से भी अधिक दिलचस्प और मनोरंजक होगी। आशा है, आप उसका भी स्वागत करेंगे।

जुलाई
१९५६

वर्ष : ७
अंक : ११

मुख - चित्र

एक बार दुर्वासा दस हज़ार शिष्यों के साथ दुर्योधन के यहाँ अतिथि के रूपमें आया। दुर्वासा बहुत गुसैल था। छोटी-मोटी बात पर ही शाप दे बैठता था। इसलिये दुर्योधन उसकी बहुत खातिरदारी की। दुर्वासा ने कहा—"दुर्योधन! मैं तुम्हारी अतिथि-सेवा देखकर बहुत सन्तुष्ट हूँ। तुम चाहो जो वर माँगो।"

"स्वामी! पाण्डव काम्यक वन में ठहरे हुए हैं। आप और आप के शिष्य असमय में उनका आतिथ्य माँगिये। यही मेरी इच्छा है"—दुर्योधन ने कहा।

दुर्वासा यह मान गया। अपने दस हज़ार शिष्यों को लेकर, वह दुपहरी के बाद, काम्यक वन में पाण्डवों के पास पहुँचा। धर्मराज और उनके भाइयों ने दुर्वासा को नमस्कार कर उनका स्वागत किया।

"धर्मराज! मैंने और मेरे शिष्यों ने अभी तक भोजन नहीं किया है। हम गंगा में स्नान करने जा रहे हैं। इस बीच में हमारे लिये भोजन का प्रबन्ध करो।" यह कह दुर्वासा अपने शिष्यों के साथ स्नान करने गया।

उससे पहिले ही द्रौपदी ने भिक्षा-पात्र से चावल निकालकर पकाया और अपने पतियों को खिला दिया था। वह इस पशोपेश में थी कि दुर्वासा और उनके शिष्यों को कैसे खिलायें। वह चिन्तित हो कृष्ण का ध्यान करने लगी।

तुरत कृष्ण ने आकार द्रौपदी से कहा—"मुझे भूख लग रही है।" द्रौपदी ने कहा—"क्या तुम ही मेरी परीक्षा लोगे? मैंने तो बर्तन भी माँज दिये हैं।"

"कहीं न कहीं कुछ तो होगा। देख-दाखकर मेरे लिये भोजन दो।" —कृष्ण ने कहा। द्रौपदी ने लाकर कृष्ण को भिक्षा-पात्र दिखाया। उसमें एक बचा-खचा चावल का दाना था। कृष्ण ने उसे मुख में रख लिया। दूसरे ही क्षण दुर्वासा और उनके शिष्यों का पेट भर गया और वे डकारने लगे।

"इस हालत में धर्मराज के यहाँ भोजन खा कैसे सकेंगे? हम न खायें तो वे हमें शाप भी दे सकते हैं।" सोचते सोचते उन्होंने गंगा-स्नान किया और बिना पाण्डवों के पास गये वे उधर से ही उधर लौट गये।

तू तू मैं मैं!

एक गुरु के दो शिष्य थे। उन दोनों की कभी न बनती थी। उन दोनों को आपस में मिलाने के लिए, गुरु ने जी तोड़ कोशिश की; पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। सोने से पहिले जब वे उसके पैर दाबा करते, तब भी शिष्य आपस में झगड़ा करते। इसलिये गुरु बायाँ पैर एक को दाबने को कहता तो दायाँ पैर दूसरे को।

एक बार ऐसा हुआ कि बायाँ पैर दबानेवाले शिष्य को कहीं बाहर जाना पड़ा। उस दिन रात को, दूसरा शिष्य दायाँ पैर दबाकर चला गया। "बेटा! ज़रा बायाँ पैर भी दबा देना"—गुरु ने शिष्य से कहा। परन्तु उस शिष्य को बायें पर उतना ही गुस्सा आता था, जितना कि उसके दबानेवाले पर। इसलिये उसने एक पत्थर लाकर, बायें पैर पर पटक दिया। गुरु दर्द के कारण चिल्लाने लगे। मूर्ख शिष्य को डाँट-डपटकर गुरु ने वैद्य से पैर की चिकित्सा करवायी।

बाहर गया हुआ शिष्य वापिस आया। जब उसने "अपने पैर" पर पट्टी बँधी देखी तो उसने चिन्तित स्वर में पूछा—"गुरु जी! पैर में क्या हो गया है?" गुरु ने जो कुछ गुज़रा था, सुना दिया।

"दुष्ट की इतनी हिम्मत! क्या मैं ही कोई निकम्मा हूँ?" कहते हुए वह भी एक पत्थर उठा लाया। गुरु के बहुत कहने-सुनने पर भी उसने पत्थर से उनका दायाँ पैर चकनाचूर कर दिया।

मित्र-प्रेम

गंगा नदी के किनारे, किसी गाँव में जय और प्रताप नाम के दो क्षत्रिय रहा करते थे। वे बचपन से ही लंगोटिया यार थे। उन्होंने साथ ही विद्याध्ययन किया। मगर बड़े होने पर, किसी राजा की सेना में नौकरी करने के लिए वे अलग अलग रास्ते पर चल दिये।

उनमें से जय, अमरावती में, विदर्भ देश के राजा के यहाँ नौकर हो गया। वह अपने शौर्य से राजा को सन्तुष्ट कर काफ़ी तरक्की भी कर गया। प्रताप भी उज्जयिनी में, मालवा देश के राजा की नौकरी में शामिल हुआ। राजा का प्रशंसा-पात्र बनकर उसने भी कीर्ति पाई।

बारह साल तक, वे बचपन के साथी एक दूसरे से न मिले। समय बीतता गया। पर उनमें से एक भी दूसरे को कभी न भूला। अगर कोई कभी अमरावती से उज्जयिनी जाता तो जय अपने मित्र के लिए नाना प्रकार के उपहार भेजता; और अगर कोई उज्जयिनी से अमरावती जाता तो प्रताप जय के लिए तरह तरह के तोहफ़े भेजता।

जय को कुछ दिनों बाद, प्रताप को देखने की इच्छा हुई। राजा की अनुमति लेकर वह अमरावती से उज्जयिनी गया। प्रताप के आनन्द की सीमा न थी। उसकी आवभगत में उसने कुछ उठा न रखा था। पर प्रताप को ऐसा लगा जैसे वह गोबर में गुलाब जल डाल रहा हो।

ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते थे, त्यों त्यो जय न खाता, न सोता। वह कतई सूख गया था। इसका कारण यह था कि प्रताप की नज़र जय के घर में रहनेवाली एक सुन्दर लड़की पर पड़ गई थी। जब

श्री रामेश्वर प्रसाद

से उसने उसको देखा, तभी से उसका और किसी चीज़ पर ध्यान ही न जाता ।

"क्यों जय? क्यों इस तरह दुबले होते जा रहे हो? वैद्य को बुलवाऊँ क्या?"—प्रताप ने अपने मित्र से बार बार पूछा ।

"तुम्हारे सिवाय और मेरा कौन घनिष्ट मित्र है? सच कहे देता हूँ । मैंने तुम्हारे घर में एक खूबसूरत लड़की को देखा है । अगर मैं उससे शादी न कर सका तो मैं मर मिटूँगा ।"—जय ने कहा ।

"उस लड़की का नाम मनोरमा है । उसके माँ-बाप नहीं हैं । पर बहुत कुछ ज़मीन-जायदाद है । मै उससे शादी करने की सोच रहा था । पर चूँकि इससे तुम इतना प्रेम करने लगे हो, तुम ही उससे शादी कर लो । यही मेरी एक बड़ी भेंट है, जो मैं तुम्हें दे सकता हूँ ।" कहते हुए प्रताप ने जय को मनाया, और उसकी मनोरमा के साथ शादी करवा दी । थोड़े दिनों बाद, जय, मनोरमा को साथ लेकर, उज्जयिनी से अमरावती वापिस चला आया ।

थोड़ा समय बीता । उज्जयिनी के राजा की मृत्यु के बाद युवराज राज-सिंहासन पर बैठा । उसके शत्रुओं ने प्रताप की चुगली

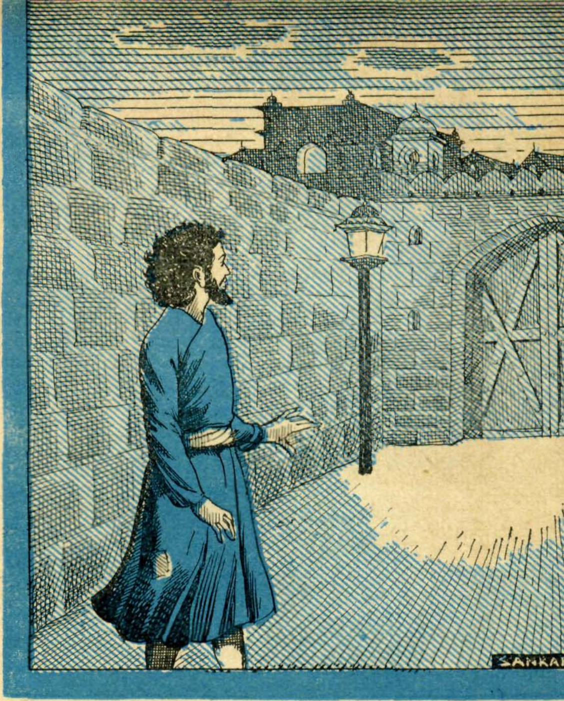

करके उसको नौकरी से निकलवा दिया । प्रताप बहुत गरीब हो गया ।

तब उसने सोचा कि जय ही उसकी मदद कर सकता है । प्रताप अमरावती शहर की ओर निकल पड़ा । उसके पास सिवाय पहिने हुए कपड़ों के और कुछ न था । जब वह नगर में पहुँचा तब काफ़ी अन्धेरा हो चुका था । "इस अन्धेरे में, मैले-कुचले कपड़े पहिन जय के पास गया, तो वह शायद पहिचानेगा कि नहीं । रात यहीं कहीं काटकर, कल सवेरे उसे देखूँगा ।" यह सोच प्रताप रात

के सिवाय और कई लोगों ने भी देखा था। वे हत्यारे का पीछा करते करते भागे। प्रताप को देखकर उन्होंने समझा कि वह ही हत्यारा है। उसको पकड़कर वे कोतवाल के पास ले गये। प्रताप शक्ल सूरत से ही हत्यारा लगता था। इसलिये कोतवाल ने प्रताप को रात भर थाने में रखा और अगले दिन सिपाहियों के साथ उसे कचहरी में भेज दिया।

प्रताप को गली में ले जाता हुआ देख कर जय ने उसे पहिचान कर सिपाहियों से पूछा—"इसे कहाँ ले जा रहे हो?"

"कल रात, इस आदमी ने किसी की हत्या की है। अब इसे कचहरी ले जा रहे हैं।"—उन्होंने कहा।

"अरे पागलो! श्मशान में हत्या मैंने की है। इसे तुरत छोड़कर मुझे ले जाओ।"—जय ने कहा।

"यह कौन है, मैं नहीं जानता। हत्या मैंने की थी।" प्रताप ने कहा।

सिपाही चक्कर में पड़ गये। वे दोनों को कचहरी ले गये। न्यायाधीश ने दोनों से पूछतलब की पर वे यह निर्णय न कर पाये कि कौन सचमुच का हत्यारा है।

काटने के लिए श्मशान की ओर गया। वहाँ एक अच्छी जगह देखकर वह लेट गया। परन्तु उसको नींद न आई। रात को उस तरफ़ दो आदमी आये। देखते देखते उनकी बातचीत झगड़े में बदल गया। आख़िर, एक छुरी निकालकर दूसरे की तरफ़ बढ़ा। दूसरे ने भी छुरी निकालकर पहिले को भोंक दिया। छुरे की चोट खाकर वह चिल्लाकर गिर पड़ा। भोंकनेवाला घबराकर प्रताप की तरफ़ भागा।

दोनों व्यक्तियों का झगड़ा, और एक दूसरे का आपस में छुरों से भोंकना, प्रताप

"इन दोनों में एक हत्यारा है, और दूसरा पागल। कौन क्या है, यह कहना मेरे बस की बात नहीं है। दोनों को ले जाकर फाँसी दो।"—उसने यों फैसला दिया।

सिपाही जय और प्रताप को बध्यस्थल ले गये। वहाँ उपस्थित कोतवाल को उन्होंने न्यायाधीश का फ़ैसला सुनाया। फाँसी देखने के लिये अमरावती के कई लोग एकत्रित हुए। उनमें असली हत्यारा भी था। यह देख कि सरकारी कर्मचारी उसे तो पकड़ नहीं सके, और दो निर्दोषियों को फाँसी दे रहे हैं उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने कोतवाल के पास जाकर कहा—"तुम्हारी अक्ल भी खूब है। असली हत्यारा मैं हूँ। इन दोनों को छोड़ दो और मुझे फाँसी दो।"

बिना अदालत के फ़ैसले के कोतवाल को किसी को सज़ा देने का हक न था। अपराधियों की संख्या, एक से दो, और अब दो से तीन हो गई थी। कोतवाल तीनों को लेकर न्यायाधीश के पास पहुँचा।

"इस हत्या के विषय में तो मैंने पहिले ही फ़ैसला दे दिया है।" न्यायाधीश ने कहा।

"एक और हत्यारा मिला है। इन तीनों को मिलाकर फ़ैसला दीजिये।" —कोतवाल ने कहा।

इस बार सुनवाई में जय और प्रताप मान गये कि वे हत्यारे न थे।

"जब तुम हत्यारे नहीं थे तो तुमने क्यों कहा कि तुमने हत्या की है?" न्यायाधीश ने जय से पूछा।

"हुज़ूर! यह प्रताप मेरे बचपन का दोस्त है। उसने मेरे लिये अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। जब उसको हत्यारा समझ कर सिपाही ले जा रहे थे,

तो मैंने यह समझकर कि वह सचमुच हत्यारा है, अपने को अपराधी बता उसको बचाने की कोशिश की।"—जय ने कहा।

"तुझे क्या कहना है?"—न्यायाधीश ने प्रताप से पूछा।

"मैंने अपने मित्र को सचमुच हत्यारा समझकर उसका अपराध अपने ऊपर ले लिया।" प्रताप ने कहा।

न्यायाधीश ने असली हत्यारे से पूछा—"अब तेरी बात क्या है? जब उनको सज़ा देने के लिये ले जाया गया, तभी तूने क्यों सच बताया?"

"हुज़ूर, जिसकी मेरे हाथ मौत हुई है, वह पाजी और दग़ाबाज़ था। अलावा इसके, मुझे अपनी रक्षा के लिये उसको मारना पड़ा। उसको मारने के कारण, सच पूछा जाय, तो आप मेरा सम्मान कर सकते हैं। परन्तु आप वह न करेंगे। आप फाँसी देंगे, इसलिये मैंने तबतक कुछ न कहा। और अगर मेरे बदले, दो निर्दोषी फाँसी पर चढ़ा दिये गये तो क्या मैं नरक में न जाऊँगा? इसलिये मुझे अपना अपराध स्वीकार करना पड़ा। इसका कारण कोतवाल की काबिलियत नहीं है, बल्कि नाकाबलियत है।"—उस व्यक्ति ने निडर होकर कहा।

न्यायाधीश ने काफ़ी देर तक सोचने के बाद, तीनों को छोड़ते हुये कहा—"तू हत्यारा होने पर भी योग्य मालूम होता है। छोड़ दिये जाने पर भी तू और हत्यायें न करेगा। तू मनुष्य के प्रणों का आदर करता है, यह सोच कर मैं तुझे छोड़ता हूँ।"

बाद में प्रताप, जय के घर में ही ठहरा। उस राजा के यहाँ उसको नौकरी मिल गयी। दोनों मित्र, मृत्यु पर्यन्त, एक साथ, आराम से रहते रहे।

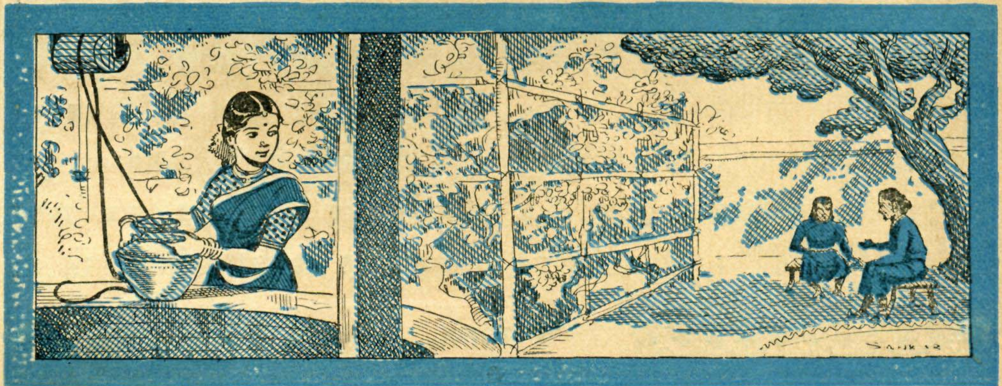

[१२]

जब नरवाहन ने जंगलियों के दूत को अपमानित करके भेजा तो उन्होंने युद्ध के लिये तैयारियाँ शुरु कर दीं। उस इलाके में, एक क़िले के खण्डहर से उन्होंने युद्ध चलाने की ठानी। नरवाहन ने क़िले को घेरने के लिये अपनी सेना भेजी। भयंकर युद्ध शुरु हुआ। आगे......।

पहाड़ी की तलहटी में सैनिकों का शोर-शरावा और हाथियों का चीत्कार सुन दो जंगली नवयुवक खण्डहर की चारदीवारी पर चढ़कर नीचे की ओर देखने लगे। वे तालियाँ पीट पीटकर जोश में कह रहे थे—"दुश्मन लगता है भेड़िया गाँव तक पहुँच गये हैं। हमारे लोग उनके हाथियों पर शेर छोड़ रहे हैं।" मैं भी उनको यह कहता सुन उनके पास जा पहुँचा।" शिवदत्त यों अपनी कहानी कहता जाता था।

विजय-गर्व से अन्धी हुई नरवाहन की गज-सेना और उनके पीछे आते हुए पदाति, हमको दिखाई दिये। भेड़िया गाँव के आसपास जंगली नवयुवकों ने पेड़ों की आड़ में से उन पर यकायक शेर छोड़ दिये थे। गरजते भयंकर शेरों को देखकर हाथी अन्धाधुन्ध पीछे की ओर भागने लगे। उनके पैरों से बचते हुए शेरों से अपनी रक्षा करते हुए, नरवाहन के सैनिक सिर पर पैर रख इधर उधर बेतहाशा भागने लगे।

"अच्छा काम किया!"—मेरे पास खड़े जंगली नवयुवकों ने कहा। "पर क्या वे शेरों को पकड़कर फिर शत्रु पर छोड़ सकते हैं?"—मैंने उनसे पूछा।

"सब शेरों को फिर से पकड़ लेना सम्भव नहीं है। कुछ जंगल में भाग ही जायेंगे।"—उन्होंने बताया।

यह सुनते ही, मेरा इस तरह की युद्ध-कला में, रहा-सहा विश्वास भी उठ गया। सशस्त्र सुसज्जित सैनिकों पर, इस तरह शेरों के छोड़ने से वे एक बार तो भय के कारण पीछे भाग सकते हैं; परन्तु दूसरी बार वे होशियारी से आकर उनको मार भी सकते हैं।

शाम तक, मैंने इस तरह कई और विचित्र दृश्य जंगल में देखे। एक जगह नरवाहन के सैनिक इकट्ठे होकर भोजन करने को ही थे कि किसी ने पेड़ पर से उन पर एक टोकरा छोड़ दिया। फिर क्या था, देखते देखते बड़े बड़े ज़हरीले साँप फुँकारते फुँकारते उसमें से बाहर निकले। नरवाहन के सैनिक अपने हथियार छोड़-छाड़कर, जान बचाकर इधर-उधर भाग निकले और कुछ साँप अपनी

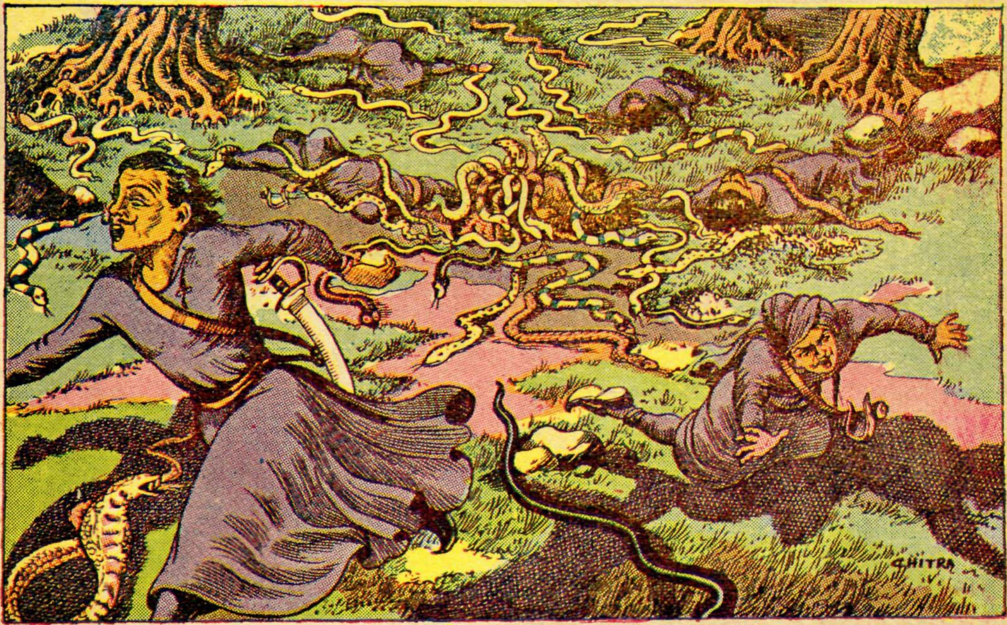

बाम्बियों में खिसक गये, और कुछ पेड़ों पर।

मैंने उस दिन रात को, बूढ़े जंगली सरदार को बताया भी कि इस तरह के युद्ध से नरवाहन को जीतना असम्भव था। वह भी मुझसे सहमत था कि उन हथियारों से कोई ख़ास फ़ायदा न था, जिनका एक ही बार उपयोग हो सकता था।

बहुत सोचने-विचारने के बाद मुझे एक बात सूझी। मैंने बूढ़े जंगली सरदार से भी सलाह-मशविरा किया। मैंने सलाह दी कि जैसे-तैसे नरवाहन के अधिकांश सैनिकों को क़िले की ओर आकर्षित करना चाहिये। यह क़िला जिसके हाथ में होगा, अपने से चार-पाँच गुने शत्रुओं से मुक़ाबला कर सकेगा और उनको नष्ट भी कर सकेगा।

शत्रुओं को नष्ट करने की जिम्मेवारी मुझे सौंपी गयी। मैंने वहाँ एकत्रित सात-आठ जंगली सरदारों को सारी बात समझायी। शत्रु शक्तिशाली है। उसके पास सुसज्जित सेना है। पहाड़ की चोटी पर बने क़िले को घेरने के लिये, उसकी अश्व-सेना, गज-सेना आदि, निरुपयोगी-सी हैं। इसलिए

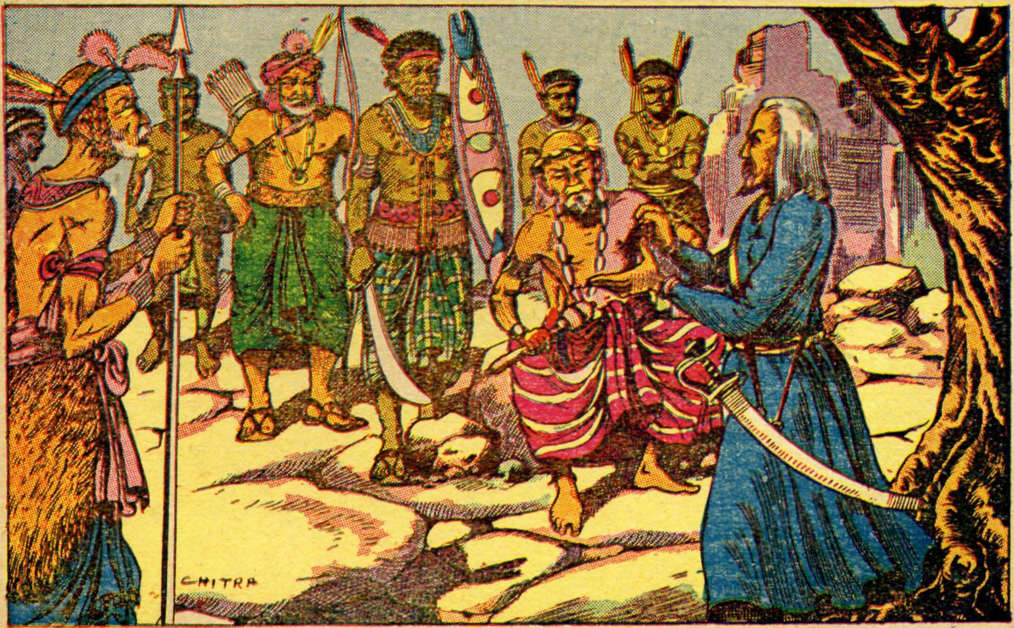

शत्रु ज़्यादहतर पदातियों को ही काम में लायेगा। उस हालत में, हमें दुर्ग के सब रास्तों को बन्द कर देना चाहिये। और जो ऊपर आने की कोशिश करें, हम उन पर पत्थरों की वर्षा कर सकते हैं। पेड़ों पर से उन पर बाणों की बौछार कर सकते हैं। यह सब करने पर भी यदि शत्रु क़िले तक पहुँच ही गया तो हम उसके बाद उनका कुछ नहीं कर सकते।

अब जो मेरा काम था, उसे दुर्ग-रक्षा कहने की अपेक्षा दुर्ग प्रान्त की रक्षा कहना अधिक अपयुक्त होगा। इस क़िले के खण्डहर में, ऐसी कोई बड़ी चीज़ न थी, जिसकी हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी थी। परन्तु शत्रुओं को यह दिखाना था कि हम क़िले की रक्षा कर रहे हैं, ताकि वे हमारी तरफ़ आयें और जंगलों में भगाकर हम उनका ख़ातमा कर दें।

अच्छे तीरन्दाज़ जंगली नवयुवकों को चुनकर मैंने क़िले के चारों ओर के पेड़ों पर पहरे के लिये चढ़वाया। ताकतवर, हट्टे-कट्टे नौजवानों को मैंने बड़े बड़े पत्थरों के पीछे छुपा दिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे पत्थरों को दुश्मनों पर धकेल दें। मैंने उनको इसके लिए हुकुम दे दिया था।

सूर्य के पश्चिम दिशा की ओर जाते जाते हमारा रक्षा का कार्यक्रम पूरा हो गया था। तब हट्टे-कट्टे जंगली, अपने हथियार लेकर खण्ड़कर की ओर आये, और उनको ढूँढ़ते ढूँढ़ते नरवाहन के सैनिक भी पहाड़ की तलहटी में आये।

इससे पहिले कि शत्रु कवायद करते करते एक जगह इकट्ठे होते; पेड़ों पर छुपे हुये जंगली तीरन्दाज़ों ने उन पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी। नरवाहन के सैनिक यह न जान सके कि बाण कहाँ

से आ रहे थे। वे डर के मारे भागने लगे। उनमें गड़बड़ी पैदा हो गयी। उस गड़बड़ी में बिना निशाना ठीक किये, अन्धाधुन्ध वे आसपास के पेड़ों पर बाण छोड़ने लगे।

उसी समय, नरवाहन के कुछ सैनिक, तलवार लेकर पहाड़ी पर चढ़ने लगे। उन लोगों पर हट्टे-कट्टे नौजवान बड़े बड़े पत्थर लुढ़काने लगे। तंग रास्ता था, इधर उधर भाग नहीं सकते थे, इसलिये उनमें से कई भारी पत्थरों के नीचे चीखते-चिल्लाते मर गये।

इस तरह, भयंकर युद्ध चार-पाँच घंटों तक चलता रहा। इस बीच में नरवाहन के सैनिक खण्ड़हर के पास पहुँच गये थे। मैं जान गया कि पहाड़ की तलहटी में पहरा देते हुए जंगली नवयुवकों को ऊपर लाने का मौका न था।

पेड़ों की शाखाओं पर से ज़हर-से जले बाणों को छोड़नेवालों का मुक़ाबला करने का शत्रु ने नया ही तरीका अपनाया।

हाथी पर सवार हुए सैनिकों को उन पेड़ों के पास ले जाया जाता। महावत का इशारा पाकर हाथी अपनी सूँड़ से, पेड़ की टहनियों को तोड़ने लगते। जब टहनियाँ टूट टूटकर गिरतीं, तो उसके साथ जंगली तीरन्दाज़ भी गिरते। और उनके गिरते ही शत्रु अपने भाले और तलवारों से उनका काम तमाम कर देते।

कुछ देर बाद, इस तरह लड़ते लड़ते, जंगली युवक नरवाहन के सैनिकों द्वारा या तो मारे गये, नहीं तो घायल किये गये। और जब दुश्मन को मालूम हुआ कि उनका पीछे से कोई मुक़ाबला नहीं कर रहा है तो वे अपनी अपनी सवारियों पर, पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगे।

मुझे उन शत्रु-सरदारों की बेअक्ली पर आश्चर्य हुआ, जो घोड़ों और हाथियों को पहाड़ पर चढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। कुम्भस्थल पर महावत के अंकुश पड़ते ही, हाथी लाचार हो, चट्टानों पर चढ़ने की कोशिश करते। इस तरह जबरदस्ती वे कुछ दूर चलते, फिर उनके पैर से कोई बड़ा चट्टान लुढ़कता, और उसके साथ वे भी लुढ़कते लुढ़कते नीचे पहुँचते। घोड़ों की हालत भी यही थी।

मैं अपने अनुचरों और रहे-सहे जंगली सैनिकों को लेकर खण्ड़हर की ओर पीछे हटने लगा। क़िले के दरवाज़े के पास बूढ़ा जंगली सरदार मुझ से मिला।

"शिवदत्त! लगता है, हम अब न जीत पायेंगे।"— बूढ़े ने कहा। उसकी आवाज़ में मुझे न दुःख दिखाई दिया, न भय ही। "ख़ैर अगर ऐसा हुआ भी तो मुझे यह तसल्ली रहेगी कि हम पशुओं की तरह उस नरवाहन के हाथ में नहीं पड़े। यह ही काफ़ी है। इस खण्ड़हर में ही हमारा आख़िरी युद्ध होगा। मैं चाहता हूँ कि आप अपने सैनिकों को लेकर किसी सुरक्षित जगह चले जायें।"— वृद्ध ने कहा।

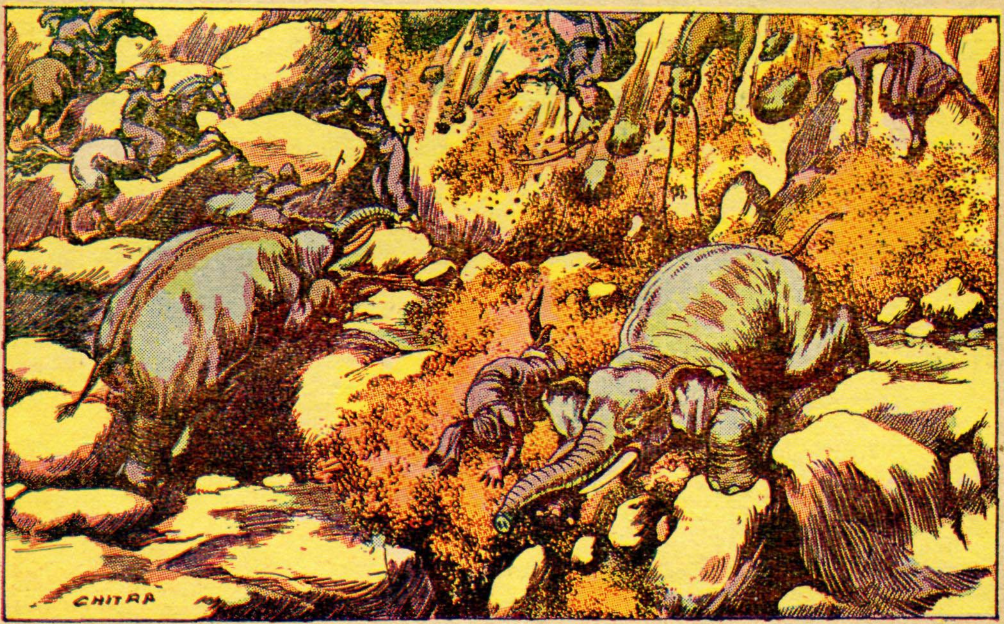

वृद्ध नायक यों कह रहा था कि वह सारा प्रान्त, नरवाहन के सैनिकों के शोर से प्रतिध्वनित होने लगा। जंगली नवयुवक, जो अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए सिद्ध थे, क़िले की दीवारों से शत्रु का मुक़ाबला करने लगे। बूढ़े सरदार ने भी अपने हाथ से वह डंडा फेंक दिया, जो उसके अधिकार का सूचक था। तलवार लेकर वह भी शत्रुओं पर कूद पड़ा।

फिर जो आमने-सामने युद्ध हुआ, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जंगली तो सब आशाएँ छोड़ चुके थे। वे नरवाहन के सैनिकों को इस तरह काटने लगे, जैसे वे कोई भूस के ढ़ेर हों। परन्तु शत्रु उनसे संख्या में बहुत अधिक थे। इसलिये वे, जंगली सैनिकों को पीछे हटाते हटाते क़िले में घुस गये।

मै अपने सैनिकों को लेकर पीछे हटता हटता क़िले की चारदीवारी के बाहर जा निकला। बूढ़े सरदार के आख़िरी शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे। शायद वह तब तक युद्ध में मारा भी गया हो। मैंने पीछे मुड़कर क़िले की ओर देखा। एक टूटी हुई दीवार पर वह मुझे दिखाई

दिया। अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करता, तलवार घुमाता, दीवार के पास खड़े बीस-पच्चीस नरवाहन के सैनिकों पर वह कूद पड़ा। उस वृद्ध की वीरता, दृढ़ता देखकर मेरी आँखें चौधिया-सी गईं।

मैं अपने सैनिकों को लेकर, तेज़ी से समुद्र की ओर चल पड़ा। मैं जानता था कि उस द्वीप में अब एक क्षण रहना भी ख़तरे से ख़ाली न था। भाग्य ने अभी मेरा साथ शायद न छोड़ा था। समुद्र के किनारे मुझे दो किश्तियाँ दिखाई दीं। अपने सैनिकों को किश्तियों में बिठाकर, चप्पू चलाते चलाते हम समुद्र में निकल पड़े। मैं यह न सोच पाया कि कहाँ जाया जाय? और कैसे जाया जाय? फिर रास्ते में मुझे आप दिखाई दिये, मन्दरदेव! यही मेरी कहानी है।"—शिवदत्त ने कहा।

"समरसेन का जीवन, और आपका जीवन आश्चर्यमय है, अद्‌भुत है।" —मन्दरदेव ने कहा।

"भाग्यशाली हैं।" कहते कहते शिवदत्त मुस्कराया। इतने में एक सैनिक ने किश्ती में खड़े होकर कहा—"देखिये! उस तरफ़ क्या रोशनी दिखाई देती है?"

मन्दरदेव ने उस तरफ़ देखते हुए कहा —"शिवदत्त! यह कोई द्वीप-सा नज़र आता है। इस तरह निरुद्देश्य समुद्र में भटकने से हमारा किसी द्वीप में पहुँचना अच्छा है न?"

"हाँ! किश्तियों को उस द्वीप की ओर जाने दिया जाय! अगर उस पर मनुष्य रह सकते हों, तो कोई बात नहीं। अगर कोई भयंकर द्वीप हुआ तो...." शिवदत्त अपना वाक्य बिना पूरा किये हँसने लगा। (अभी और है)

वायुमण्डल के भाग

हम पहले ही जान चुके हैं कि भूमि पर एक वायु की परत है, और वह परत मीलों दूर चली गई है। विशेषज्ञ इस परत के तीन भाग बताते हैं। इसमें भूमि से सटे हुए भाग को 'ट्रोपोस्फ़ीयर' कहते हैं। इस परत की मोटाई सर्वत्र एक जैसी नहीं है। यह दक्षिण ध्रुव के आसपास चार मील मोटी है। भूमध्य रेखा तक पहुँचते पहुँचते ११ मील की हो जाती है। जब वायु गरम होकर ऊपर जाती है तो इस भाग से प्रायः ऊपर नहीं जा पाती। वायु की तरह गरमी भी इसी तरह ऊपर जाते जाते कम हो जाती है। इस भाग में तीन सौ फुट के बाद गरमी का तापमान एक डिग्री कम हो जाता है।

इसके बाद के भाग को, यानी मध्य भाग को 'स्ट्राटोस्फ़ीयर' कहते हैं। यह पहिले भाग से ४०-५० मील एक फैला हुआ है। इस भाग में हवा बहुत ही हल्की होती है। यह नहीं कहा जा सकता कि इस भाग में भी पहिले भाग की तरह, वायु ऊपर जाते जाते ठण्ड़ी होती है कि नहीं।

इस भाग में कोई विमान नहीं जा सकता। पर पिकार्ड वग़ैरह, विशेषज्ञ खोज के लिये बेलून में बैठकर इस भाग में भी हो आये हैं। खोज के सिलसिले में कई बार यह भी देखा गया कि ऊपर जाते जाते वायु गरम हो जाती है।

भूमि के चारों ओरवाली वायु का एक चौथा भाग, इस "स्ट्राटोस्फ़ीयर" में है—ऐसा विशेषज्ञों का कहना है। धुआँ, धूल, भाप, वग़ैरह इस भाग तक नहीं पहुँचते। परन्तु, कुछ सूक्ष्म कृमि, ज्वालामुखी की धूल, आदि, इस भाग में भी दिखाई देते हैं। यहाँ हवा पूर्व से पश्चिम की ओर समान सतह पर बहती है। भूमध्य रेखा की ओर से ध्रुवों की तरफ़ भी थोड़ी-बहुत हवा चलती है।

सब से ऊपर के भाग को "आइनोस्फ़ीयर" कहते हैं। इसमें मनुष्य अभी तक नहीं पहुँच पाया है। जो कुछ विशेषज्ञ इसके बारे में जानते हैं, वह सब अनुमान मात्र है। उस भाग में, सम्भव है, अम्लजन, नत्रजन, हैड्रोजन, हीलियम आदि वायु हों। उल्का, विद्युत आदि, इस भाग में पाये जाते हैं।

जय पराजय

साहसी विक्रमार्क फिर पेड़ के पास जाकर, शव उतार, कन्धे पर डाल श्मशान की ओर चल दिया। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा! जितनी उदारता तुम में है वह हर किसी में नहीं होती। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, सुनो" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की :

ताम्रपर्णी नदी के किनारे कई छोटे मोटे राज्य थे। राजाओं में हमेशा कोई न कोई युद्ध चलता रहता। एक बार, तेजस्वी नाम का एक व्यक्ति युद्ध में गजनगर को जीत कर, वहाँ के राजा को मारकर, स्वयं राजा बन गया। गजनगर का युवराज माधव वर्मा भाग निकला। नदी पारकर वह व्याघ्र नगर पहुँचा। उसने वहाँ के राजा शौर्य वर्मा के यहाँ शरण ली।

बेताल कथाएँ

गजनगर को हथिया कर तेजस्वी व्याघ्र नगर को हड़पने की तैयारियाँ कर रहा था। क्योंकि उसका शत्रु माधववर्मा अब भी वहाँ सुरक्षित था। यही नहीं, तेजस्वी का दूसरे राज्यों को हड़पने का लालच अभी पूरा न हुआ था। इसलिये उसने सेना जमा की और सामन्तों को साथ ले किश्तियों में नदी पारकर, व्याघ्र नगर पर हमला बोल दिया। व्याघ्र नगर का राजा शौर्य वर्मा तो इस आक्रमण की तैयारी में ही था। उसने अपनी सेनाएँ गुप्त स्थान पर छुपा दीं, और शत्रु को क़िले की ओर बढ़ने दिया। फिर यकायक उसने उन पर आक्रमण कर दिया। तेजस्वी की बुरी तरह हार हुई। सेना खेत रही, वह स्वयं जैसे तैसे जान बचाकर गजनगर पहुँचा।

इस युद्ध में सहायता करनेवाले सामन्तों में एक मतिमन्त नाम का युवक था। वह भी उन लोगों में से था, जिन्होंने व्याघ्र नगर के राजमहल में प्रवेश किया था। तब उसकी नज़र शौर्य वर्मा की लड़की, लावण्य वती पर पड़ी। वह उस पर दीवाना हो गया। सिवाय उससे शादी करने के उसे और कुछ सूझता ही न था। उसने एक दिन तेजस्वी के पास जाकर कहा—

"महाराज! व्याघ्र नगर में हुई हमारी हार के बारे में सोचते सोचते मेरी नींद भी हराम हो गई है। खाने को जी नहीं करता! अगर हम फिर कभी व्याघ्र नगर पर हमला करें तो ज़रूरी है कि पहिले वहाँ हमारे गुप्त-चर भेजे जायँ।"

"कौन जाने को तैयार होगा?—" तेजस्वी ने पूछा।

"मैं जाने के लिये तैयार हूँ।"— मतिमन्त ने कहा। उसको गुप्तचर के रूप में भेजने के लिए तेजस्वी मान गया।

मतिमन्त ने व्याघ्र नगर पहुँच कर राजा के दर्शन किये और उससे यों कहा —"महाराज! आप इस ख्याल में न रहिये कि तेजस्वी की तरफ़ से ख़तरे का डर हट गया है। उसने मुझे आपके पास गुप्त-चर के रूप में भेजा है ताकि मैं उस को आपकी तैयारियों के बारे में जानकारी देता रहूँ। मुझे किसी प्रकार की जानकारी की ज़रूरत नहीं है। मगर फिर भी अच्छा है कि आप सम्भल कर रहें।"

शौर्य वर्मा ने तुरत आसपास के राजाओं को बुलवाया और उनसे समझौता कर लिया कि अगर तेजस्वी ने उसपर हमला किया तो वे सब उसकी मदद करेंगे। मतिमन्त ने शौर्य वर्मा से कहा कि वह उसकी लड़की लावण्यवती से विवाह करना चाहता है। शौर्य वर्मा भी इस के लिए मान गया। परन्तु लावण्यवती ने इससे पहिले ही माधव वर्मा से प्रेम करना शुरू कर दिया था। उसने अच्छे मौके के अभाव में यह बात किसी से कही भी न थी। तेजस्वी को इस बारे में कोई ख़बर न थी। पर वह इतना जान गया था कि मतिमन्त ने उसे धोखा दिया है। इसलिये

उसने शौर्य वर्मा के पास ख़बर भिजवाई—"यदि आप राजद्रोही मतिमन्त और मेरे विरोधी, माधव वर्मा को तुरत वापिस न भेज देंगे, तो मैं आप पर आक्रमण कर दूँगा।"

शौर्य वर्मा ने जवाब में कहला भेजा—"अगर आपने हम से युद्ध करने की ठानी तो इस बार पहिले से कहीं अधिक नीचा दिखाकर आपको हम वापिस भेजेंगे।" यह जवाब देखते ही तेजस्वी ताड़ गया कि डराने-धमकाने से काम न चलेगा। उसने ऐसा दिखाया जैसे युद्ध की तैयारियाँ सर्वथा स्थगित कर दी हों।

मतिमन्त ने शौर्य वर्मा को तेजस्वी के बारे में बहुत कुछ बताया। गजनगर में गुप्त-चर भेजकर वहाँ की ख़बरें इकट्ठा करने में उसने बहुत मदद दी। राजा तो यह जानता ही था कि मतिमन्त उसकी लड़की से विवाह करना चाहता है। इसलिए उसने अपनी लड़की से कहा—"बेटी! अच्छा है तुम मतिमन्त से विवाह करने के लिए मान जाओ। हम लोगों का क्षेम उसी पर निर्भर है।"

परन्तु लावण्यवती ने कभी का निश्चय कर लिया था कि वह माधव वर्मा से ही

विवाह करेगी, यह शौर्य वर्मा जानता था; पर आज माधव वर्मा पहिले जितना ज़रूरी न था। अगर कल युद्ध छिड़ जाय तो वह अधिक सहायता न कर सकता था। उसके लिए, गजनगर के वासी विद्रोह करने के लिए भी तैयार न थे। लावण्यवती माधव वर्मा से अपना मन हटाकर मतिमन्त पर भी न लगा पाती थी। इसलिये वह कुछ निर्णय न कर पा रही थी।

सच कहा जाय तो युद्ध की कोई आशंका भी न थी। गजनगर से गुप्त-चरों ने आकर बताया कि वहाँ युद्ध की कोई तैयारियाँ नहीं हो रही थीं। लोगों की ज़िन्दगी आराम से कट रही थी। तभी तेजस्वी के यहाँ से, दूत एक निमन्त्रण पत्र लेकर शौर्य वर्मा के पास आया—"हमारा निवेदन है कि आप सपरिवार, समित्र, हमारे वसन्तोत्सव में उपस्थित होने की कृपा करें।"

"महाराज! आप इस निमन्त्रण का भरोसा न कीजिये। ज़रूर कोई न कोई षडयन्त्र रचा जा रहा है।" मतिमन्त ने शौर्य वर्मा को आगाह किया। शौर्य वर्मा ने निमन्त्रण स्वीकार न किया और दूत को भेज दिया।

इतना ही नहीं; शौर्य वर्मा ने उस साल अपने ही राज्य में बड़े ज़ोर-शोर से वसन्तोत्सव मनाने की ठानी। अपने मित्र राज्यों के पास निमन्त्रण भी भिजवाये। वे सब आये भी। दावतें, तमाशे वग़ैरह खूब हुए। लावण्यवती के कारण उत्सव की और भी शोभा बढ़ी।

वसन्तोत्सव के लिये निमन्त्रित व्यक्तियों में कई ऐसे थे, जो लावण्यवती से विवाह करना चाहते थे। उन लोगों का विश्वास था कि वसन्तोत्सव में

राजा कोई सूचना करेंगे। मतिमन्त भी इसी आशा में था। एक माधव वर्मा ही ऐसा था, जो उस उत्सव में आनन्दित न था। वह जानता था कि लावण्यवती को उससे प्रेम है। परन्तु उसका अपना भविष्य ही अनिश्चित था। वह दावत में भी शामिल होने की हिम्मत न कर सका। घर में ही खा-पीकर वह सो गया।

जब राजमहल में खुशियाँ मनाई जा रही थीं उसी समय यकायक ढ़ोल-ढ़माके बज उठे। एक सिपाही ने आकर बताया—"महाराज गजनगर का राजा नदी पार करके आ गया है। शत्रुसेना नदी के किनारे के गाँवों को तहस-नहस कर रही है।"

सब के सब स्तब्ध रह गये। शौर्य वर्मा ने सीधे खड़े होकर, गम्भीर स्वर में कहा—"मित्रो! तेजस्वी ने मुझे वसन्तोत्सव के लिये निमन्त्रित किया था, पर मैं गया नहीं, इसलिये वह बिना निमन्त्रण के ही यहाँ आ रहा है। उसका उचित सत्कार करने के लिये आप सब मेरी मदद कीजिये।"

अतिथियों में से एक भी न बोला। वे दावत खाने आये थे न कि युद्ध करने।

उनकी सहायता के बग़ैर इस बार शौर्य वर्मा शत्रु को जीत नहीं सकता था। क्योंकि इस बार शत्रु का मुक़ाबला करने के लिये वह तैयार न था। उसकी हार निश्चित-सी लगती थी।

उसी समय लावण्यवती ने खड़े होकर कहा—"निमन्त्रित सज्जनो! मुझसे विवाह करने के लिये, आप लोगों में से, पहिले से ही कई का उद्देश्य है। सच कह रही हूँ कि मैंने माधव वर्मा से विवाह करने का निश्चय किया था। पर अब मैंने देश के कल्याण को ध्यान में रख

अपना निश्चय बदल लिया है। इस संकट काल में, जो मेरे पिता की सबसे अधिक सहायता करेगा, मैं उसी के साथ सहर्ष विवाह करूँगी। मैं ईश्वर की शपथ करती हूँ।"

यह सुनते ही सब यकायक चौंक-से गये। वे भोजन करते करते उठ खड़े हुए, और अपनी सेनाओं को युद्ध के लिये तैयार करने चले गये।

लावण्यवती भी उस अन्धेरे में गुप्त मार्ग से माधव वर्मा के घर गई। वह गाढ़ निद्रा में था। उसने उसे उठाकर कहा—"एक ओर हमारी जान आफ़त में है, और तुम आराम से सो रहे हो। उठो, उठो!" उसे उठाकर उसने अपनी प्रतिज्ञा भी सुना दी। "अब तक मैने यह वचन दिया था कि मैं तुम से ही शादी करूँगी। परन्तु अब तुम पर ही यह जिम्मेवारी है कि मुझे अपनी पत्नी बनाओ। देखें, तुम कैसे मेरे प्रेम को बनाये रखते हो।" माधव वर्मा को यह बताकर वह जिस रास्ते से आई थी, उसी रास्ते अन्तःपुर को चली गई।

उसके चले जाने के बाद कुछ देर तक माधव वर्मा किंकर्तव्य विमूढ़-सा बैठा रहा।

तब एक छुरी कमर में बाँधकर वह निकल गया। जब वह जंगल से होता हुआ, नदी की ओर जा रहा था तो उसको कहीं कोई आहट सुनाई दी। वह सावधानी से उस तरफ़ गया तो देखता क्या है कि वहाँ शत्रुओं के तम्बु गड़े हुए हैं। रात का समय था। वे सो रहे थे।

शौर्य वर्मा भी, उन सैनिकों में एक सैनिक की भाँति, खुल्लम खुल्ला, निड़र, उन तम्बुओं के बीच घूमने-फिरने लगा। उस पर किसी को शक भी नहीं हुआ। किसी ने उसकी तरफ़ देखा तक नहीं। वह तम्बुओं की छान-बीन कर गया। आख़िर तेजस्वी के तम्बू के पास गया। वह तम्बु के पास, ज़मीन पर लेट, साँप की तरह रेंगता रेंगता तम्बु के अन्दर गया और अन्दर जाकर खड़ा हो गया।

तम्बु में तेजस्वी गाढ़ी नींद सो रहा था। पास ही एक मशाल जल रही थी। कमर में से छुरी निकालकर तेजस्वी के पास गया। इसी तेजस्वी ने अकारण उसके राज्य पर आक्रमण किया था, उसके पिता को मार दिया था, राज्य को छीन लिया था; उसको शरणार्थी बना दिया था। वह

ही उसका जानी दुश्मन था। उसकी जान अब उसके हाथ में थी। उसके मर जाने पर उसको राज्य मिल सकता था। और शौर्य वर्मा की आफ़त भी टल सकती थी। लावण्यवती उसकी पत्नी हो सकती थी। पर माधव वर्मा ने तेजस्वी को मारा नहीं। "भले ही वह जानी दुश्मन हो, पर बेहथियार आदमी को कैसे मारें? यह काम मुझसे नहीं हो सकता।" यह सोच अपनी छुरी तेजस्वी के तकिये पर भोंककर माधव वर्मा वापिस क़िले की ओर चला गया। सवेरे होते ही क़िले की रक्षा की सब तैयारियाँ ख़तम हो गई थीं। जो लोग वसन्तोत्सव में भाग लेने आये थे, वे सब अपने सशस्त्र सैनिकों के साथ, हथियार लेकर सन्नद्ध थे। उनमें मतिमन्त और माधव वर्मा भी थे।

सूर्य के निकलने के बाद क़िला घेरा जाने लगा। दो-तीन घड़ी में, क़िले की रक्षा की व्यवस्था सब शिथिल पड़ गयी। शत्रु सेना महासमुद्र की तरह क़िले की ओर बढ़ रही थी। जय-जयकार के साथ तेजस्वी ने दरबार में प्रवेश किया। पराजित शौर्य वर्मा, उसका परिवार, उसके सहायक राजा-सामन्त, पहिले ही वहाँ उपस्थित कर दिये गये थे।

तेजस्वी के सिंहासन के पास आते ही समीप खड़े शौर्य वर्मा ने अपना किरीट उतारकर उसके पैरों पर रख दिया।

"यह क्या कर रहे हो? तुम अपने माप का बनाया हुआ अपना किरीट क्यों उतार रहे हो? जो तुम्हारे सिर की शोभा है, वह मेरे पैर की शोभा कैसे हो सकती है? लगता है, तुम किसी सन्देह के कारण यों कर रहे हो। मैं तो केवल अतिथि के रूप में आया हूँ। मैंने

वसन्तोत्सव के लिए आपको निमन्त्रित किया था, पर आप आये नहीं, मैं ही आ गया हूँ। परन्तु क्योंकि अपने क़िले के दरवाज़े बन्द कर दिये थे, और हथियार बन्द सैनिकों का पहरा लगा दिया था, इसलिये हमें सीधे आने की अपेक्षा, दीवार लाँधकर आने की तकलीफ़ करनी पड़ी। तुम अपना किरीट अपने पास रखो शौर्य वर्मा! मैं इसे लेने के लिए नहीं आया हूँ। देने के लिए आया हूँ।" कहते हुए तेजस्वी ने छुरी बाहर निकाली।

"यह आप में से किसकी है? यह कोई मेरे तम्बु में छोड़ गया था। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वे कौन हैं?"—"तेजस्वी ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

माधव वर्मा ने सामने आकर कहा—"मैं ही हूँ।"

"तो यानी तुम ही थे, जिसके हाथ में कल रात मेरी जान थी। शाबाश। मैं तुम्हारा कर्ज पास नहीं रखना चाहता। जो मैं दे सकता हूँ वह सब तुम्हें दे दूँगा, और जो मैं न दे पाऊँगा, वह शौर्य वर्मा शायद दे दें। क्यों शौर्य वर्मा? अगर तुम इसका अपनी लड़की से विवाह करोगे तो मैं इसको गजनगर का सिंहासन दे दूँगा। मेरे कोई बाल-बच्चे हैं नहीं। इन दोनों को ही अपने बच्चे समझूँगा। कहो न तथास्तु?"—तेजस्वी ने कहा।

शौर्य वर्मा को अपने कानों पर ही विश्वास न हुआ। वह मूर्ति की तरह खड़ा था। यह सुन यकायक सचेत-सा हो गया। उसने तेजस्वी का आलिंगन किया। तभी फिर से दावत की तैयारियाँ होने लगीं। दावत में दुल्हा-दुलिहन एक दूसरे के पास ही बैठे। बाद में उनका बड़े धूमधाम से

विवाह हुआ। माधव वर्मा पत्नी को साथ लेकर, गजनगर गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"क्या लावण्यवती की उदारता बड़ी है, जिसने पिता के राज्य को बचाने के लिए अपने प्रेम का बलिदान कर देने का निश्चय किया था? या माधव वर्मा की, जिसने बिना अपने भविष्य की परवाह किये, प्रेयसी और शरण देनेवाले राजा को छोड़ निरायुध पर हथियार उठाना न चाहा था? या तेजस्वी की उदारता बड़ी है, जिसने अपने जानी दुश्मन को मारने से इनकार कर दिया था और युद्ध की विजय को भी छोड़ दिया था? अगर इसका ठीक जवाब जानबूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।"

"लावण्यवती ने तब अपने प्रेम को छोड़ना चाहा जब और कोई रास्ता न था। माधव वर्मा निरायुध शत्रु को मारने के लिए ही तेजस्वी तम्बु में गया था। हो सकता है कि वह कार्य बदनामी को डर से न किया हो। इसलिए इन दोनों की उदारता इतनी बड़ी नहीं हैं। परंतु तेजस्वी की उदारता साफ़ है। निष्कलंक है। उसे कोई मारने आया था, सिवाय उसके कोई न जानता था। युद्ध में भी उसी की विजय हुई थी। उसकी विजय का कोई विरोध न कर सकता था। उसमें कोई बदनामी न थी। पहिले यह बिना जाने ही कि उसको किसने नहीं मारा था, उसने शौर्य वर्मा को अपनी विजय-लक्ष्मी दे दी थी। बाद में सब कुछ मालूम होने पर भी उसने अपना निश्चय तनिक भी न बदला। तेजस्वी की उदारता ही बड़ी है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ पेड़ पर जा बैठा।

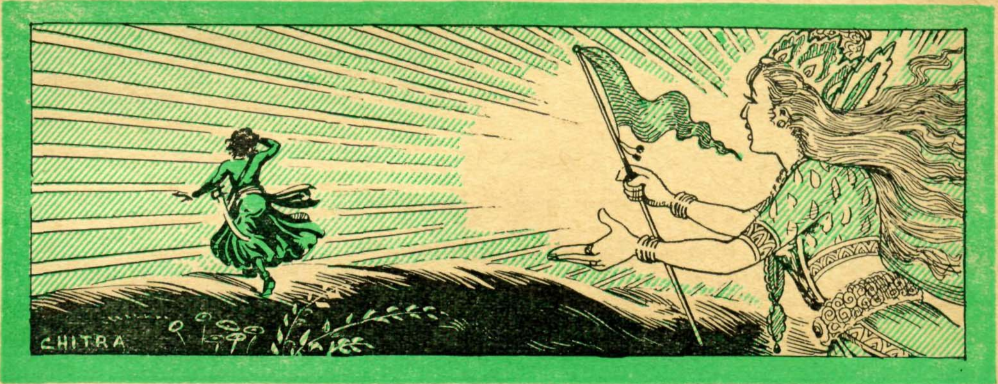

आदिम मनुष्य - २

पहिले पहल भूमि पर जो मनुष्य पैदा हुए थे, उनमें चार तरह की जातियाँ थीं। वे थीं फ़्लारिस्बाद मनुष्य, सोलो मनुष्य, रोड़ीसिया मनुष्य, और नियांड़र्ताल मनुष्य। लाख या डेढ़ हज़ार वर्ष पहिले तक वे जीवित रहे। इनमें आधुनिक आदमी के कोई लक्षण भी न थे। इनका सिर ऊँचा न होकर चपटा था। सिर्फ़ फ़्लारिस्बाद मनुष्य के दिमाग़ का अग्र भाग कुछ विकसित हुआ था। उसमें बोलने की शक्ति और याद करने की शक्ति भी आ गई थी। पर चूँके नियांडर्ताल आदमी के अस्थिपंजर भूमि के तीन भागों में मिले थे, इसलिये अन्दाज़ किया जाता है कि वह सारे भूमण्ड़ल में फैला हुआ था।

पूर्ण विकसित मनुष्य का तीन लाख वर्ष पूर्व अवतरण हुआ। उसके अवशेष चिन्ह यूरोप के, स्वान्स कूम्ब के पास, और अफ़्रीका में कंजेरा के पास मिले हैं। परन्तु इसका पूर्वज न रोड़ीसिया मनुष्य था, न नियांडर्ताल मनुष्य ही। वह उसके पहिले ही जन्म चुका था। यह इनके साथ शायद रहा होगा। भूमध्यरेखा से ऊपर की भूमि जब हिमावृत थी तो, हो सकता है कि यह मनुष्य अफ़्रीका वासी हो। क्योंकि इस मनुष्य के बारे में प्राप्त सामग्री अधिकतः आफ़्रीका में ही मिली है। इस मनुष्य ने वस्त्रों का उपयोग किया था, अथवा वह अग्नि का उपयोग सीख गया था, इसके अनुमान करने के आधार नहीं मिलते।

भूमि पर यद्यपि मनुष्य की कई जातियाँ थीं, पर एक जाति ही क़ायम रही। इसके समय में कई प्राणी पैदा हुये और नष्ट हो गये, पर मनुष्य वैसा ही रहा और रहेगा भी।

जहाँ तक मनुष्य का सम्बन्ध है, उसके जीवन में ही परिवर्तन हुए। आकार-आयतन में नहीं। क़रीब ६५०,००० वर्ष पहिले, पत्थर से मनुंष्य ने अपने उपकरण तैयार किये। इस तरह प्रस्तर युग प्रचलित हुआ। इस प्रस्तर युग का तीन तरह से विभाजन हुआ है। इसका पहिला भाग १७०,००० वर्ष पहिले ख़तम हुआ, और दूसरा ३७,००० पहिले।

जब ब्रह्मदत्त काशी का राजा था, बोधिसत्व कोसल देश के राजा के रूप में पैदा हुए। उनका सत्यसेन नाम का एक लड़का था। जब सत्यसेन बड़ा हुआ तो राजा ने उसको युवराज बनाया। युवराज की पत्नी शंबुला देवी बहुत ही सुन्दर थी।

पर दुर्भाग्यवश युवराज को कोढ़ हो गया। कई वैद्यों ने कई तरह की चिकित्सा की, पर रोग काबू में न आया। वह बढ़ता गया। वे रोग के कारण लोगों से मिलने-मिलाने में भी शर्माते थे। वे पिता की अनुमति पा एक निर्जन वन में रहने के लिए निकल पड़े। तब शंबुला देवी भी पति के साथ वनवास के लिए चल पड़ीं। युवराज ने उन्हें बहुत मनाया, पर वे न मानीं।

वन में जहाँ फल, फूल की बहुतायत थी, और पानी भी खूब मिलता था, वहाँ एक कुटिया बनाकर युवराज रहने लगे। शंबुला सवेरे सवेरे उठतीं, नित्य कृत्यों से निवृत्त होकर घर का काम काज कर, पति को दातुन, पानी वग़ैरह देतीं, उनके मुख धोने के बाद उनको फल आदि, खाने को देतीं। फिर टोकरी, खुरपा लेकर जंगल में चली जातीं और फल, कन्दमूल लातीं। तालाब से पानी लातीं, पति को स्नान करातीं। पहिले पति को भोजन खिलाकर स्वयं भोजन करतीं। इस तरह वे दिन-रात, पति की देख-भाल करतीं।

एक दिन वे फलों के लिए एक नये रास्ते पर गईं। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्हें एक प्रपात दिखाई दिया। प्रपात के पास एक नाला था। उसको देखते ही उसमें नहाने की उनकी इच्छा हुई। जब वे उस में स्नान कर बाहर

निकलीं तो उनका शरीर सोने की तरह चमक रहा था।

उन्होंने यह स्वयं न देखा। पर उसी समय उस तरफ़ से जाता एक जंगली उनको देख कर हैरान रह गया। उसने उनको अपने गाँव बुलाया। शादी करने के लिए कहा। उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। यह देख शंबुला देवी ने कहा—"अरे दुष्ट तेरा सत्यानाश हो!" कहते हुए उस पर कलश भर नाले का पानी उँड़ेल दिया। वह इस तरह गिर पड़ा, मानों उस पर बिजली गिर गई हो।

जब वह उसका पीछे छुड़ाकर कुटिया पर पहुँचीं तो काफ़ी देर हो गई थी। पति ने पूछा—"इतनी देर कहाँ रही?"

शंबुलादेवी ने जो गुज़रा था, सो सुना दिया। पर पति ने उनका विश्वास न कर के कहा—"स्त्रियाँ तो बातें बनाना खूब जानती हैं। चाहे तू जहाँ भी घूम-फिर तुझे कोई पूछने वाला नहीं है।"

"स्वामी! यदि मैं जो कुछ कह रही हूँ, सच हो, तो आपकी बीमारी इस पानी से ठीक हो जाय" कहते हुए उसने कलश में लाये नाले के पानी से उनका अभिषेक किया। तुरत मानों किसी ने जादू कर दिया हो, उनका कोढ़ झड़-सा गया, और शरीर सोने की तरह निखर आया। उन्हें पत्नी के पातिव्रत्य से अधिक यह पसन्द आया कि उनकी बीमारी दूर हो गई है। वे कोसल राजधानी गये। बगीचे में दावत देकर उन्होंने अपने आने के बारे में राजा को सूचित किया।

राजा स्वयं, राज-मर्यादा के साथ अपने लड़के का स्वागत करने बगीचे में आये। युवराज की बीमारी के दूर करने में सहायक होने के कारण, उनके साथ वनवास करने

के कारण, राजा ने शंबुला देवी को पटरानी का पद दिया। उन्होंने अपने आप वानप्रस्थ आश्रम स्वीकार किया, और सत्यसेन का राज्याभिषेक करवाया।

पिता की आज्ञा के अनुसार सत्यसेन ने शंबुला देवी को पटरानी तो बना दिया था, पर वे उनके बारे में उदासीन ही रहते और अन्य पत्नियों के साथ अधिक समय बिताते। पति की उदासीनता के कारण, और पत्नियों की ईर्ष्या के कारण शंबुला देवी सूख कर काँटा हो गई। उनका सौन्दर्य भी जाता रहा।

एक बार, ससुर जी, शंबुला देवी के घर खाना खाने आये। उनकी हालत पर उनको अचरज हुआ। उन्होंने पूछा—"क्यों बेटी! क्यों इस तरह कमज़ोर हो गयी हो?"

"उस पत्नी की और क्या हालत होगी, जिसका पति उसे ठीक तरह न देखे आप ही बताइये?" शंबुला देवी ने पूछा।

बूढ़े राजा ने सब जान लेने के बाद, सत्यसेन को बुलाकर समझाया—"बेटा! कृतघ्नता से बढ़कर कोई पाप नहीं है। भयंकर कोढ़ के कारण जब तू मनुष्यों में घूम-फिर न पाता था, और जब तू निराश हो जंगल में चला गया था, तब तेरे साथ रहकर जिस पत्नी ने तेरी दिन-रात सेवा की, आख़िर, तेरी बीमारी दूर की; राज्य हाथ में आते ही, क्या तू उसे भूल सकता है? ये राज्य, ये वैभव, किसी को भी मिल सकते हैं! परन्तु पतिव्रता पत्नी—भाग्यशालियों को ही मिलती है। इसलिये शंबुला देवी का तिरस्कार न कर। इससे तेरी ही हानि होगी।"

सत्यसेन ने अपनी भूल अनुभव की। उन्होंने अपनी पत्नी से क्षमा माँगी। उनको और पत्नियों से भी कहीं अधिक अधिकार दिये। दोनों सुख से रहने लगे।

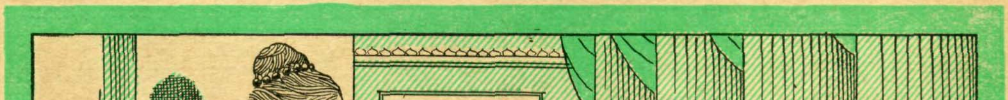

चालाक माँ-बेटी

[६]

यद्यपि वह दो बार असफल रहा था तो भी 'पारा' ने अपनी ज़िद न छोड़ी। तीसरी बार वह सपेरे का वेश बनाकर, टोकरे में तीन साँप रख, जुरेक की दुकान के सामने उन्हें नचाने लगा। नचाते-नचाते, पारा ने एक साँप को जुरेक के पैरों के सामने फेंक दिया। जुरेक डर के कारण भाग गया। इस गड़बड़ी में पारा ने थैली पर हाथ मारा। पर इतने में जुरेक ने वापिस आकर, एक सीसे की गोली से साँप का मुँह पीस दिया, और दूसरी गोली को पारा की तरफ़ फेंका। पारा एक तरफ़ हट गया। गोली जाकर एक बुढ़िया को लगी, जिससे तुरत उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

आसपास के लोगों ने जुरेक की बुरी तरह ख़बर लेनी चाही। उनके डर के कारण जुरेक ने दरवाज़े पर से वह थैली हटा ली और अपने रसोई घर में एक गढ़ा खुदवाकर उसमें थैली दाब दी।

"थैली तो अब निकाल ही दी। बच्चे की वर्षगाँठ पर क्यों नहीं वह रुपया खर्च करते हो?" जुरेक की पत्नी ने कहा। परन्तु जुरेक इसके लिये न माना।

रात को जुरेक ने एक सपना देखा। सपने में कोई पक्षी थैली को चोंच से खोदकर निकाल रहा था। जुरेक घबराता हुआ उठा। उसने पत्नी से कहा—"देख, रसोई घर में कोई कुछ खोद रहा है।" जुरेक की पत्नी दिया लेकर

कुमारी रज़िया रेहाना

"अगर थैली लिये बग़ैर वापिस आये तो दरवाज़ा भी न खोलूँगी।" पत्नी ने कहा।

यह चोरी किसने की थी, यह जुरेक भलीभांति जानता था। वह यह भी जानता था कि पारा कोतवाल अहमद के घर ठहरा हुआ था। इसलिये पगडंड़ियों से, वह पहिले अहमद के घर पहुँचा। जाली चाबी से बाहर का दरवाज़ा खोल, वह अन्दर जाकर दरवाज़े के पीछे, पारा की प्रतीक्षा करता करता खड़ा हो गया। इतने में पारा ने आकर दरवाज़ा खटखटाया। जुरेक ने अहमद की आवाज़ में पूछा—"क्या पारा तुम ही हो? थैली लाये हो? कहाँ है? दरवाज़े के नीचे से अन्दर सरका दो। मैंने और हसन ने बाजी लगा रखी है। बड़ी गज़ब की बाजी है। दरवाज़ा खोलकर सब बता दूँगा।"

यह समझ कि बोलनेवाला अहमद ही था, पारा ने थैली दरवाज़े में से सरका दी। जुरेक उसको लेकर, अहमद के घर की छत पर गया। वहाँ से पास के मकान पर कूदा, वहाँ से सीढ़ियों

रसोई घर में गई। उसने किसी को खिड़की में से भागते देखा। उस व्यक्ति के हाथ में दीनारों की थैली थी।

उसको ले जानेवाला पारा अलि ही था। उसने जुरेक को रसोई घर में थैली को गाड़ता देख लिया था।

"क्या कहूँ तुम्हें। कहा कि पैसा बच्चे की वर्षगांठ पर खर्च करो, नहीं माने, अब उसे कोई चोर चुरा ले गया है।" जुरेक की पत्नी रोने-धोने लगी।

"पैसा जायेगा कहाँ? अभी लाये देता हूँ।" तुरन्त जुरेक वहाँ से निकला।

पर से उतर कर, दरवाज़ा खोल गली में चला गया और खुशी खुशी घर की ओर जाने लगा।

पारा ने दो तीन बार दरवाज़ा खटखटाया। पर किसी ने कोई जवाब न दिया। वह ताड़ गया कि जुरेक ने ही उसे गुलाट दी है। वह भी जल्दी जल्दी रास्ता काटकर, जुरेक के घर पहुँचा। सोने के कमरे में लड़के को लेकर जुरेक की बीबी सो रही थी। पारा ने उसके उठने के पहिले ही उसके हाथ पैर बाँध दिये। लड़के को एक टोकरे में लिटा दिया। जुरेक की इन्तज़ारी करता दरवाज़े के पास खड़ा हो गया।

जुरेक ने आकर दरवाज़ा खटखटाया। पारा ने जुरेक की पत्नी की आवाज़ में पूछा—"थैली मिल गई है क्या?"

"हाँ, ले आया हूँ।" जुरेक ने कहा।

"टोकरी में रखो! पहिले गिन लूँ, तभी आने दूँगी।"—पारा ने जुरेक की पत्नी की तरह कहा। उसने एक टोकरी में रस्सी बाँधकर नीचे फेंक दी, और उसको ऊपर खींचकर थैली ले ली। थैली और टोकरी में लेटे हुए बच्चे

को लेकर पारा अहमद के घर चला गया। जब देखा कि बहुत खटखटाने पर भी दरवाज़ा नहीं खुल रहा है, जुरेक ने किवाड़ पर ज़ोर ज़ोर से मारना शुरू किया। बहुत चिल्लाया, पर कोई जवाब न मिला। जब और लोगों ने मिल-मिलाकर किवाड़ तोड़ा, तो जुरेक की पत्नी चारपाई से बाँधी गई हुई थी। थैली का तो पता ही न था। न जाने बच्चा भी कहाँ था!

जुरेक ने वे बन्धन खोले। फिर बाल खींचता हुआ, वह तुरत अहमद के घर जाकर किवाड़ खटखटाने लगा। तब सवेरा

हो रहा था। अन्दर सब जाग रहे थे। जुरेक ने पारा को देखते ही कहा— "लगता है, तूने थैली हथिया ली है, तेरा भला होगा, मेरा बच्चा मुझे वापिस कर दे।"

"तुम्हें थैली भी मिलेगी और बच्चा भी। मगर ज़रा अपनी भांजी ज़ीनाब की शादी हमारे लड़के से करने का वक्त तय करके जाओ।" हसन ने जुरेक से कहा।

"मुझे तो ज़ीनाव और पारा अलि की शादी पर कभी भी कोई एतराज़ न था। पर ज़ीनाब कोई मेमना तो है नहीं कि मंडी में खरीद लें। उससे शादी करने के लिए बहुत कुछ देना होगा।"—जुरेक ने कहा।

"ज़रूर दूँगा। क्या देना होगा?" पारा अलि ने उत्कण्ठा से पूछा।

"अजर की लड़की के पासवाला सोने का दुपट्टा, सोने की कमरबन्द, सोने की खड़ाऊँ, जो लायेगा, उसी से ही शादी करने का ज़ीनाब का इरादा है। अगर तू यह लाकर ज़ीनाब को दे सकेगा तो मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहना है।" जुरेक ने कहा। पारा ने 'हाँ' कर दी।

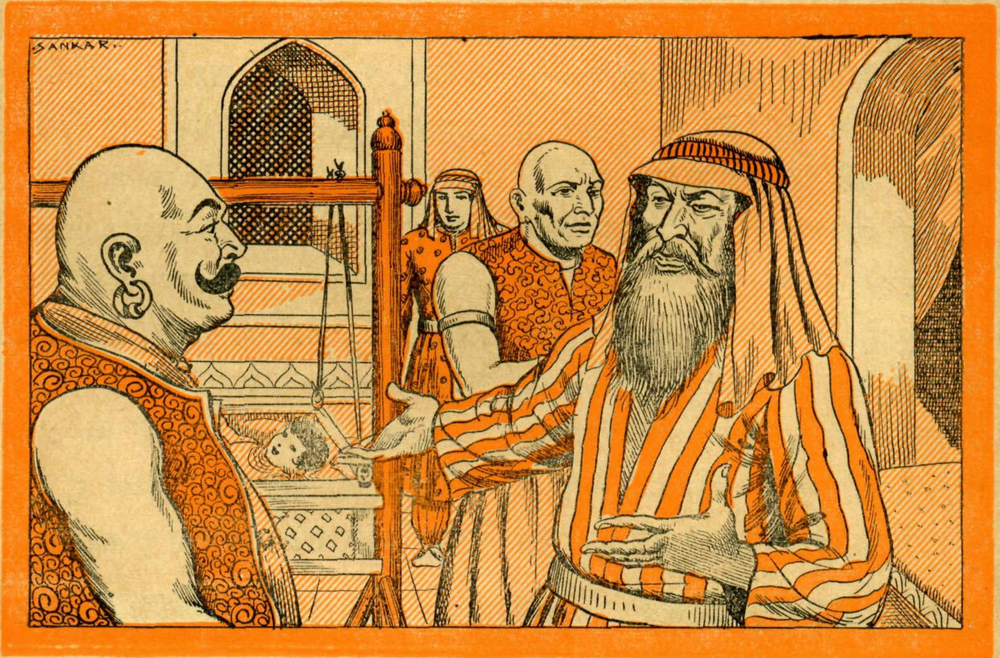

जब जुरेक अपनी थैली और लड़के को लेकर चला गया, तो हसन ने पारा से कहा—"क्या पागल हो गया है? क्यों फ़िज़ूल यह काम सिर पर ले लिया है? अजर मन्त्र-तन्त्र जानता है। भूत भी उसकी सुनते हैं। वह बग़दाद शहर से बाहर, सोने और चान्दी की ईन्टों से बने महल में रहता है। रात में, जब वह घर में रहता है, तभी वह महल दिखाई देता है। दिन भर वह शहर में सूद का व्यापार करता रहता है। रात में, घर जाकर, खिड़की के पास खड़े होकर, एक सोने के थाल में अपनी लड़की का सोने का दुपट्टा रखकर कहता है—"ईराक, ईरान और अरब के बड़े से बड़े चोरो! इसे चोरी करके दिखाओ।" कितने ही चोरों ने उस दुपट्टे की चोरी करनी चाही, पर वे सब ख़ाक हो गये। उनकी तरह तुझे भी मारने के लिए जुरेक ने यह चाल चली है।"

"ख़ैर, जो कह दिया सो कह दिया। ज़ीनाब जब दुल्हिन बनेगी तो उस पर वह सोने का दुपट्टा, सोने की कमरबन्द, सोने की खड़ाऊ खूब फबेंगी, तब उससे शादी करूँगा।" पारा अलि ने कहा।

उसे कोई रोक न सका। वह तुरत अजर की दुकान के पास गया। अजर, तब सोने को तुलवाकर, गधों पर लदवा रहा था। पारा भी नज़दीक खड़ा देखता रहा। जब वह दुकान बन्द कर, गधे पर सवार होकर घर की ओर चला तो पारा भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

अजर ने एक जगह पहुँचकर, थैली में से थोडी रेत निकालकर मन्त्र पढ़ा और उसे हवा में फेंक दिया। तुरत सामने एक महल दिखाई देने लगा। वह महल सोने-चान्दी की ईन्टों से बना था। अजर ने महल में घुसकर और खिड़की खोलकर, हाथ में सोने का थाल लिया। उसमें सोने का दुपट्टा रखकर उसने कहा—"ईराक, ईरान और अरब के चोरो! मेरी लड़की का यह दुपट्टा चुरा कर उससे शादी कर लो।"

पारा को सूझा कि अजर को मना मनाकर इन चीज़ों का हथियाना अच्छा है। "हुज़ूर! आप से कुछ बात करना चाहता हूँ।" उसने अजर से कहा।

"ऊपर आओ।" अजर ने कहा।

पारा ने ऊपर जाकर अजर को अपनी ज़रूरत के बारे में बताया। अजर सब सुन कर खूब हँसा। फिर उसने पारा के हाथ पढ़कर कहा—"अगर तू जीना चाहता है, तो मेरी सलाह मान। तू अपना यह इरादा छोड़ दे। कोई तेरा बुरा सोच कर तुझे यह करने के लिए मजबूर कर रहा है। तेरी आयु मेरी आयु से अधिक है नहीं तो मैं तुझे इसी समय मार देता।"

अलि ने तलवार निकाल कर कहा—"दुष्ट। अगर तूने मेरी माँगी चीज़े न दीं तो मैं तुझे अभी मार दूँगा।"

"उसका दायाँ हाथ गिर जाना चाहिये" अजर ने कहा। देखते देखते पारा का वह

हाथ मुरदा हो गया। पारा ने तलवार बायें हाथ में ले ली। परन्तु अजर की महिमा से वह हाथ भी गिर गया।

"अब भी तू अपनी ज़िद छोड़ता है कि नहीं?"—अजर ने पूछा।

"मुझे दुपट्टा वग़ैरह, चाहिये"—पारा ने कहा।

"उसके लिए एक ही रास्ता है। गधा बनकर उनको चरो।" कहते हुए अजर ने मन्त्र फूँककर, कुछ पानी छिड़का। तुरत अलि गधा बन गया।

अगले दिन, अजर अपने मामूली गधे की जगह पारा अलि को ले गया। उस दिन शाम को घर आने के बाद, अजर ने पारा को फिर आदमी बना दिया। "अरे! मेरी सलाह सुनकर चले जाओ। नहीं तो कोई और बदतर जानवर बना दूँगा।" पारा ने कुछ भी न सुना, वह सीधा अजर पर झपटा। अजर ने उस पर थोड़ा पानी छिड़ककर उसको भालू बना दिया।

अगले दिन, अजर की लड़की कमर ने अपने पिता से कहा—"पिता जी! उससे पूछिये कि मुझसे यह शादी करेगा?"

"तू ही पूछ।" कहते हुए अजर ने पारा को फिर आदमी बना दिया।

"क्या तुम मुझे चाहते हो या मेरी चीज़ों को?" कमर ने पारा से पूछा।

"दिलैला की लड़की ज़ीनाब्र को देने के लिए तेरी चीज़ें ही मुझे चाहिये।" पारा अलि ने कहा। अजर ने फिर उसपर पानी छिड़क कर उसको बन्दर बना दिया।

रात को कमर ने पारा की मदद करने की ठानी। भले ही वह उससे शादी न करे, परन्तु उसने उसके सुख के लिए अपनी चीज़ों को देने का निश्चय किया। उसने

अपने पिता को भी मना लिया। अपनी चीज़ों को एक थाल में रखकर, बन्दर बने हुए पारा के पास वह गई। उसको मनुष्य बनाकर उसने कहा—"अलि! ये ले जाओ और ज़ीनाब से शादी कर लो। अगर चाहो तो मुझसे भी शादी कर लो।"

पारा कमर की उदारता से बहुत प्रभावित हुआ। वह उसको साथ लेकर हसन और अहमद के पास गया। "ज़ीनाब से शादी करने के बाद कमर से शादी करना भी अच्छा है। क्योंकि यह अपने पिता की इकलौती सन्तान है। पिता के बाद वह ही उसके माल-मिलकियत की कानूनन हक़दार होगी—" उन्होंने उसे सलाह दी।

तब उन्होंने दिलैला, ज़ीनाब, और जुरेक को बुलवाया। जुरेक की उपस्थिति में पारा ने ज़ीनाब को, कमर का सोने का दुपट्टा, सोने की कमरबन्द, सोने की खड़ाऊ, दहेज में दीं। जुरेक अपनी भांजी ज़ीनाब की शादी पारा से करवाने के लिए मान गया।

जब ज़ीनाब को मालूम हुआ कि उन चीज़ों को उसे देने के लिए पारा को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ी थीं, तो उसने पारा और कमर की शादी भी मंजूर कर ली। दोनों का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ।

थोड़े दिनों बाद पारा ने खलीफ़ा के दर्शन कर उनको दरख़्वास्त दी कि वे उसे अपनी नौकरी में रख लें। क्योंकि दोनों कोतवालों और कबूतरों की डाक चलानेवाले ने उसकी सिफ़ारिश की थी, इसलिये तुरत उसको राज सैनिकों का सरदार नियुक्त कर दिया गया। हज़ार दीनार के वेतन पर वह ज़ीनाब और कमर के साथ आराम से रहने लगा। (समाप्त)

मित्र-भेद

एक दिवस जब संजीवक था
मचा रहा उस वन में शोर,
वन का राजा शेर 'पिगलक'
आ निकला सहसा उस ओर।

थका और हारा था वह तो
बहुत लगी थी उसको प्यास,
जमुना में जल देख तुरत ही
पहुँच गया धारा के पास।

किंतु उसी क्षण संजीवक की
सुन करके भीषण हुँकार,
काँप उठा वह वन का स्वामी—
हा, यह है किसकी ललकार!

जल भी फिर तो पी न सका वह
लौट गया यों ही वह आप,
बरगद के कोटर में जाकर
बैठ गया छिपकर चुपचाप।

उसके पीछे लगे सदा ही
रहते थे दो चतुर सियार,
स्वामी का जूठन ही प्रति दिन
होता था उनका आहार।

नाम एक का था 'करटक' औ'
दूजा था 'दमनक' हुशियार,
स्वामी को भयभीत देखकर
हुआ उन्हें आश्चर्य अपार।

पूछा दमनक ने साथी से—
"देख रहे हम कैसी बात,
सब डरते हैं जिसके भय से
वही छिपाता अपना गात!

कारण क्या है आखिर जिससे
स्वामी यों हैं व्याकुल भीत,
बिना पिये जल लौटे तट से
कहो आज यह कैसी रीत?"

कही बात यह तब करटक ने
"अरे, करो भी अब आराम!
कारण चाहे कुछ भी हो, पर
नहीं हमें उससे कुछ काम।

'भारती भक्त'

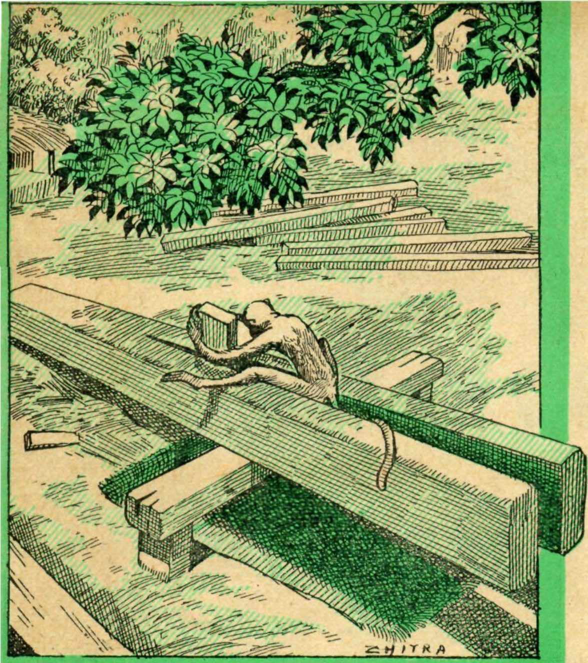

दखल दूसरे के कामों में
देना है बिलकुल बेकार,
लाभ नहीं कुछ होता उससे
होता है उलटे अपकार।

उस बंदर की भाँति उसे भी
देने पड़ते हैं निज प्राण,
व्यर्थ दूसरे के कामों में
पड़, जिसने खायी निज जान!"

दमनक ने पूछा अचरज से
"कही भला तुमने क्या बात,
बंदर था वह कौन, नियति का
सह न सका जो लघु आघात!"

करटक ने तब कहा—"सुनो जी,
गाँव एक था वन के पास,

जिसकी सीमा पर बनता था
ग्रामदेवता का आवास।

एक दिवस जब कारीगर सब
गये चले करने विश्राम,
आ निकले कुछ बंदर जिनका
शोर मचाना ही तो काम।

पड़ा एक शहतीर बड़ा था
जहाँ सघन थी वट की छाँव,
छोड़ चिरा आधा ही जिसको
गये लोग थे अपने गाँव!

बंदर एक अभागा भारी
जा पहुँचा झट उसके पास,
और बैठ उस पर निज कर से
लगा खींचने कील सहास।

बड़ा मजा आता था उसको
कील नहीं हिलती थी लेश,
लगा रहा था झूम झूमकर
जो भी था तन में बल शेष।

आखिर शब्द हुआ इक सहसा
गयी वेग से कील निकल,
इधर चिरे भागों में दबकर
बंदर बेबस हुआ विकल।

रहे देखते साथी उसके
नहीं सका कर कोई त्राण,

क्षण भर पहले विहँसा था जो
तजे उसीने रोकर प्राण।

इसीलिए मैं कहता भाई!
रहो देखते सब-कुछ मौन,
भोजन जब मिल ही जाता है
करे व्यर्थ की चिन्ता कौन!"

बोला दमनक—"तुम्हें सताती
सतत पेट की चिन्ता आह,
नहीं ज़रा भी रहती तुमको
स्वामी के हित की परवाह।

नीति यही कहती है भाई
हित कर उनका जो हैं मीत,
और अहित-चिन्तन वैरी का
करके ले उनको भी जीत।

बिना किये कुछ जीना भी क्या—
व्यर्थ बढ़ाना है भू-भार,
कुछ तो करके दिखलाना है
जिससे चकित रहे संसार!"

टोका करटक ने—"लेकिन हम
नहीं अभी हैं सचिव-प्रधान,
बिन पूछे सम्मति देने पर
मिलता है केवल अपमान।"

दमनक बोला—"रहने दो अब
कौन प्रधान या अप्रधान,

स्वामी की सेवा का फल तो
मिलता ही है कभी महान।

नहीं करेगा सेवा जो भी
रह न सकेगा सदा प्रधान,
और सतत सेवा के बल से
हम भी होंगे कभी प्रधान।

राजा-नारी-लता उसी को
अपनाते हैं अपना जान,
सदा पास जो रहता उनके
तज करके अपना अभिमान।"

सुनकर करटक बोल उठा यह
"भली कही तुमने है बात,
सोच-समझकर कहो तुम्हीं अब
करना है क्या हमको तात!"

बताओगे ?

★

१. सिलोन के इस समय कौन प्रधान मन्त्री हैं ?

२. भारत के एक ऐसे पड़ोसी राष्ट्र का नाम बताओ, जिसके राजा का पिछले दिन राज्याभिषेक हुआ ?

३. क्या भारत के प्रधान मन्त्री लेखक भी हैं ? उनकी प्रधान पुस्तकें क्या हैं ?

४. रामायण के आदि रचयिता कौन हैं और तमिल के रामायण किन्होंने लिखी है ?

५. क्या बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यास-कार शरत्चन्द्र चटर्जी जीवित हैं ?

६. तेलुगु भाषा का आदि कवि कौन समझा जाता है ?

७. सूरदास किस भाषा के कवि हैं ?

८. टॉल्स्टाय इंग्लैंड के रहनेवाले थे....यह ग़लत है कि सच ?

९. अंडमान कहाँ है, और किस के आधीन है ?

१०. मेकाओ कहाँ है, और किसके आधीन है ?

पिछले महीने के 'बताओगे ?' के प्रश्नों के उत्तर :

१. श्री अनन्तशयनम् अय्यंगार ।

२. आन्ध्र विश्व विद्यालय, और वेंकटेश्वर विश्व विद्यालय ।

३. श्री वी. के. कृष्ण मेनोन ।

४. आसाम के दक्षिण पूर्वी इलाके में ।

५. उत्तर प्रदेश में ।

६. नहीं ।

७. नोर्वो ।

८. मराठी । बोलनेवालों की संख्या २,१०,४९,५२२ है ।

अन्धे की अक्ल

किसी ज़माने में, काबुल शहर में एक नाई रहा करता था। वह अपना पेशा कई दिनों तक करता रहा, फिर वह विचारा अचानक अन्धा हो गया। इसलिये वह अपना पेशा न कर सका और भीख माँगने लगा। न जाने उसकी किस्मत में भी क्या लिखा था कि वह भीख माँग कर अपने पेशे से ज़्यादह कमा लेता था। उसने काफ़ी पैसा जमा कर लिया। उसके पास सौ चान्दी की मुहरें होगईं। उनको एक थैली में डालकर वह अपने पास रखता।

फिर उसे लगा कि इतना पैसा पास रखना ख़तरनाक था। अगर उसके पास पैसा रहा, तो अन्धा जान, उससे कोई वह छीन सकता था। अगर लोगों को यह मालूम हो गया कि उसके पास पैसे हैं, तो उसे भीख भी न देंगे। इसलिये उसने अपनी थैली कहीं रखनी चाही। थैली रखने के लिये उसे एक अच्छी जगह भी सूझी। जब कभी वह मस्जिद जाता तो एक दरवाज़े के पास बैठा करता। वहाँ फर्श पर एक लकड़ी का टुकड़ा था। फर्श से वह ठीक तरह जुड़ा हुआ न था। निकालने से बाहर निकल सकता था। उसके नीचे छोटा-सा गढ़ा था। वहाँ थैली रखी जा सकती थी।

इसलिये अन्धा एक दिन मस्जिद जाकर दरवाज़े के पास बैठ गया। जब उसे मालूम हुआ कि नमाज़ के बाद सब चले गये हैं, तो उसनें वह लकड़ी का टुकड़ा हटाकर उसके नीचे अपनी थैली रखी। फिर लकड़ी ठीक कर धीमे से बाहर खिसक गया।

परन्तु उससे एक ग़लती हो गई। जब अन्धा इस ख्याल में था कि मस्जिद

श्री वीरेन्द्र कुमार

में कोई नहीं हैं, तब एक व्यक्ति ने उसको गढ़े में पैसे रखते देख लिया था। अन्धे के चले जाने पर उसने लकड़ी हटाई और गढ़े में से थैली निकालकर वह चम्पत हो गया।

जब अगले दिन मस्जिद में कोई न था। अन्धे ने यह जानना चाहा कि उसकी थैली ठीक जगह पर थी कि नहीं। पर वहाँ से थैली नदारद थी।

अगर और कोई होता तो रो-धोकर चुप हो जाता। पर अन्धा बहुत तेज़ था। उसने न केवल पैसे चुरानेवाले को पकड़ना चाहा, बल्कि अपना पैसा वापिस वसूल करने की भी चाल सोची। उसने घर जाकर, अपने छोटे लड़के को बुलाकर कहा—"बेटा! आज से तुम भी मेरे साथ आया करो। दोनों मस्जिद के बाहर बैठेंगे। तुम आने-जानेवालों को गौर से देखना। जो मुझे देखकर हँसे उसको पहिचान लेना और उसके घर का पता लगाकर मुझे बताना।"

दो दिन बाप-बेटे ने मस्जिद के बाहर धरना दिया। दूसरे दिन अन्धे के लड़के ने अपने पिता के कान में कहा—

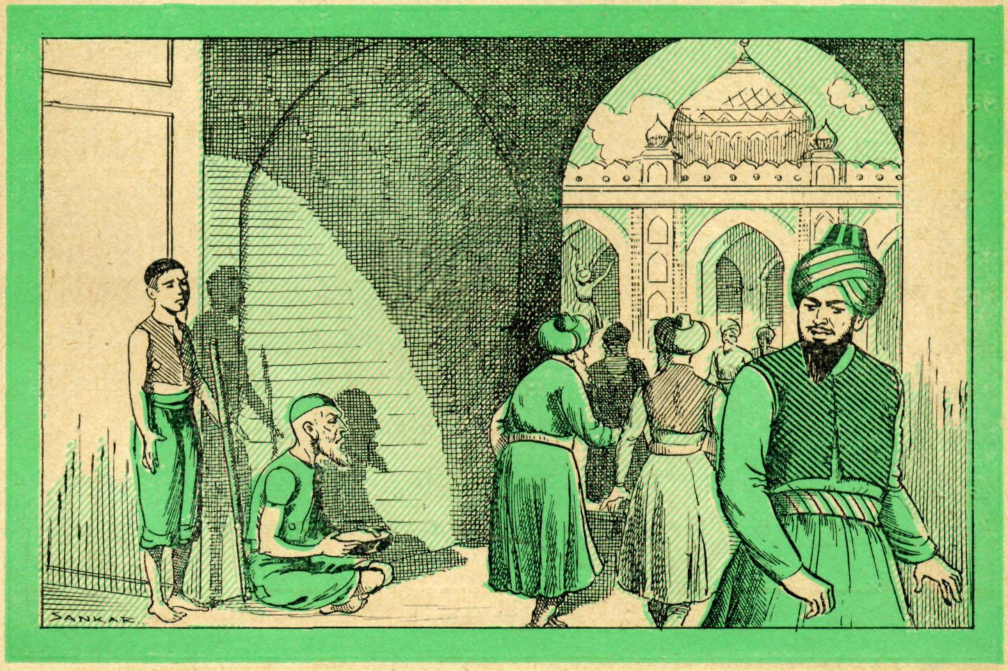

"कोई चेचक का दाग़वाला अन्दर हँसता हुआ गया है।"

"उसके बाहर आते ही उसके साथ जाकर उसका नाम वग़ैरह मालूम कर" अन्धे ने कहा। थोड़ी देर बाद अन्धे के लड़के ने जो जो जानकारी पिता ने माँगी थी, वह दे दी। वह कोई व्यापारी था।

अन्धा टटोलता टटोलता उस व्यापारी के यहाँ गया। उसने पूछा—"क्या फ़लाना हैं यहाँ?" व्यापारी ने अन्धे को अन्दर ले जाकर पूछा—"क्यों आज इस तरफ़ आये हो?"

"थोड़ा काम है! अगर कोई न हो तो कहूँ?"—अन्धे ने कहा।

"कोई नहीं हैं" व्यापारी ने कहा।

"आप शायद यक़ीन न करें; पर मैंने भीख माँग माँगकर काफ़ी पैसा इकट्ठा कर लिया था। सौ मुहरें एक रिश्तेदार को कर्ज दी हैं। और सौ मुहरें मैंने एक जगह छुपा रखी हैं। कल मेरे रिश्तेदार मेरी सौ मुहरें चुका देंगे। बाकी सौ मुहरों को मिलाकर मैं उन्हें व्यापार में लगाना चाहता हूँ। अगर किसी को रुपया देता हूँ, तो दस्तावेज़, आदि, से यह साफ़ पता लग

जायेगा कि मेरे पास पैसा है। उसके बाद मुझे कोई दमड़ी भी न देगा। क्यों मैं यह आफ़त फिजूल मोल लूँ? इसलिये मैं अपना सारा रुपया आपको सौंप दूँगा। उससे आप व्यापार कीजिए और जो मुनाफ़ा हो, उसमें से आधा आप लीजिये, आधा मुझे दीजिये।"

व्यापारी ने थोड़ी देर सोचकर कहा—"अच्छा! कल सवेरे पैसा ले आना!" उसे एक बात सूझी। इसका मतलब यह हुआ कि जो सौ मुहरें उसने ली थीं, उनके अलावा, अन्धे के पास सौ और मुहरें हैं। ऐसा लगता है कि अभी तक अन्धा नहीं जानता है कि मस्जिद में रखी थैली ग़ायब हो चुकी है। अगर वह सौ के लालच में न पड़ता तो अन्धा दो सौ मुहरें लाकर देगा। कुल मिलाकर दो सौ मुहरें एक साथ हथियायी जा सकती हैं। अगर अन्धे ने भूलकर किसी से कुछ कहा भी तो किसी को विश्वास न होगा कि उसके पास दो सौ मुहरें हैं।"

यह सोच व्यापारी ने वह थैली भी, जो उसने चुराई थी, मस्जिद में लकड़ी के नीचे रख दी। उसे अन्धे ने लेली।

अन्धा अगले दिन व्यापारी के पास नहीं गया। व्यापारी अन्धे को खोजता खोजता मस्जिद की ओर गया। मस्जिद के बाहर अन्धा दिखाई दिया।

"अरे भाई! आने के लिए कहा था, पर आये नहीं?"—व्यापारी ने पूछा।

"क्या करूँ बाबू? अन्धा जानकर रिश्तेदारों ने धोखा दे दिया है। पैसा मार लिया है। कहते हैं कि मुझसे कर्ज ही नहीं लिया। और जो पैसा मैंनें हिफ़ाज़त से छुपा रखा था, उसे कोई चोर उठा ले गया है। अब मैं क्या करूँ?....या अल्लाह"—अन्धे ने कहा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

सितम्बर १९५६ :: पारितोषिक १०)

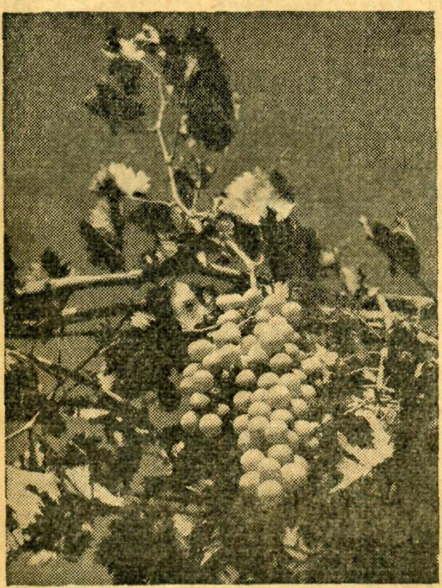
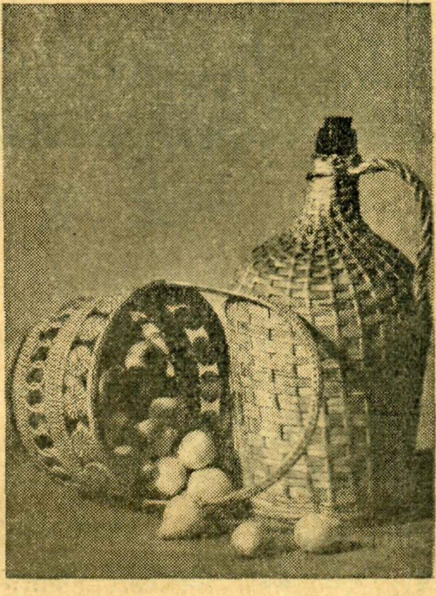

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए । परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों । परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. १०, जुलाई के अन्दर भेजनी चाहिये ।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वड़पलनी :: मद्रास - २६

जुलाई – प्रतियोगिता – फल

जुलाई के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं । इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा ।

पहिला फ़ोटो : **'रंग रंगीले मेरे हाथ!'**

दूसरा फ़ोटो : **'चम चमकीला मेरे माथ!!'**

प्रेषक : श्री ललन प्रसाद सिंह, साकची, जमशेदपुर (सिंहभूमि)

प्रो. पी. सी. सरकार

आदमी का गला "काट देना" जादूगरों का एक बहुत प्रचलित खेल है। एक लड़के को कपड़े की आराम कुर्सी पर लिटा दिया जाता है। फिर जादूगर उसको मेस्मरिज़म के प्रभाव में लाता है। पासवाले मेज़ पर एक बड़ा कोणाकार काग़ज़ और एक तेज़ तलवार, और बड़ा तौलिया रखा हुआ होता है। जब लड़का मेस्मरिज़म के प्रभाव में होता है, तो उसके सिर पर बड़ा तौलिया ढ़क दिया जाता है, और गला 'काट' दिया जाता है। तौलिये से ढ़का हुआ सिर कोणाकार काग़ज़ के नीचे पास रखे एक मामूली मेज़ पर रख दिया जाता है। जब काग़ज़ उठा दिया जाता है, तो मेज़ पर कटा सिर दिखाई देता है। यह कोई नकली सिर नहीं होगा, परन्तु असली, हाड़-माँस का सिर होगा।

अब यह बताया जाय कि यह कैसे किया जाता है। पहिले पहल ऐसे दो लड़कों को लेना चाहिये, जिनकी शक्ल एक जैसी हो। मेज़पोश, फ़र्श को छूना चाहिये और मेज़ के नीचे एक अलमारी सी बनी हुई होनी चाहिये। साथवाले ख़ाके में सब साफ़ साफ़ दिखाया गया है। एक में दिखाया गया है कि लड़का किस तरह मेज़ के नीचे अपना सिर छुपाये रखता है और किस तरह मेज़ के छेद में से अपना सिर दिखाता है। मेज़ को अख़बार से या एक तश्तरी से ढ़क दिया जाता है। यह भी चित्र से

मालूम किया जा सकता है कि किस तरह आराम कुर्सी में बने छेद से सिर निकाल दिया जाता है। एक तौलिये की अपेक्षा दो तौलियों का उपयोग करना अच्छा है। एक मेज़ के छेद को ढ़ापा जा सकना है, और दूसरे से आराम कुर्सी के छेद को छुपाया जा सकता है। एक लड़का शुरू से ही मेज़ के नीचे छुपा रहता है और दूसरे को "जादू" के काम में लाया जाता है। तौलिये के नीचे, लड़का

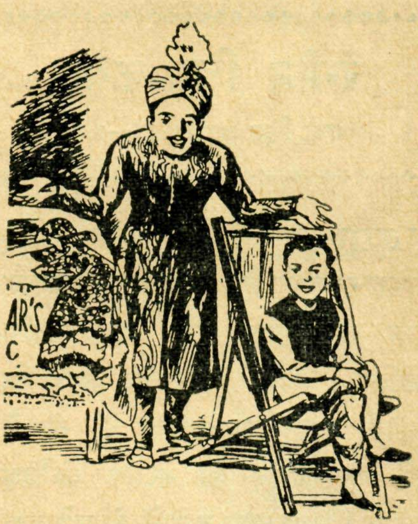

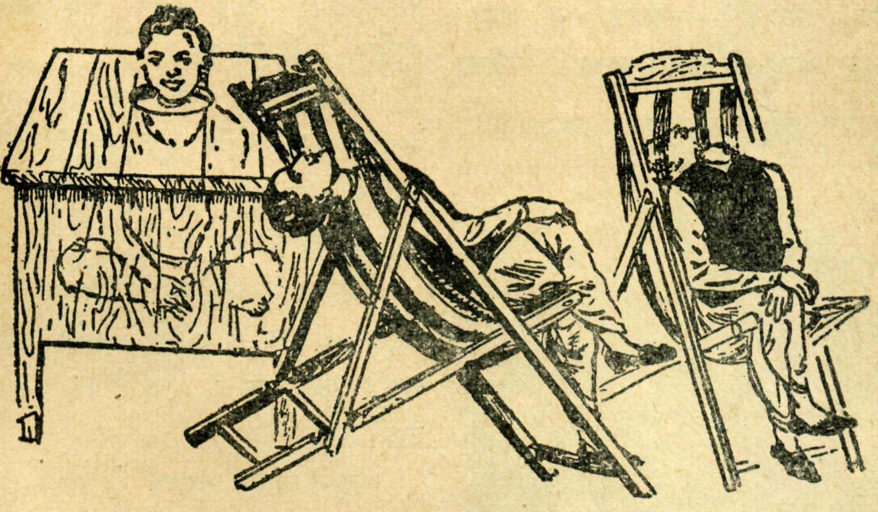

अपने सिर को नीचे ले जाता है और जादूगर काग़ज़ में इस तरह रखता है, जैसे उसमें सिर रखा हो और उसको ले जाकर मेज़ पर रख देता है। इस बीच में दूसरा लड़का मेज़ में से अपना सिर निकालता है और काग़ज़ के नीचे रख देता है। बाकी सब काम बहुत ही आसान है।

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—६

"**क्या** आपको मेरे कारण कोई अपकार हुआ है? मैंने जान बूझकर कुछ नहीं किया है। मेरा यक़ीन कीजिये। अगर आप यह बतायें कि आपको क्या नुक़सान हुआ है, तो मैं उसे दूर करने की भरसक कोशिश करूँगा। अगर आप न मानें तो मुझे बड़ा रंज होगा।"—खलीफ़ा ने कहा। अबू थोड़ा-सा राज़ी हुआ। खलीफ़ा

को साथ ले जाकर जो कुछ गुज़रा था, घटनावार उसने सुना दिया। कुर्ता उतारकर, उसने पीठ पर पड़े दाग़ भी दिखाये। उन्हें देखकर खलीफ़ा को बड़ी दया आई।

दावत खाने के बाद, दोनों एक साथ शरबत वग़ैरह पीने लगे। उस समय, खलीफ़ा ने शरबत में नशे की दवा चुपचाप मिला दी। उसके पीते ही अबू के होश-हवाश जाते रहे।

जब उसको होश आया तो वह राजमहल में था। उसके चारों ओर दासियाँ खड़ी हुई थीं।

"अरे! भूत फिर मुझ पर चढ़ बैठा है।" कहते हुए अबू ने पूरी चादर तान ली और खुर्राटे मारने लगा, मानों सो रहा हो।

गन्ना ने, बिस्तरे के नज़दीक जाकर कहा—"हुज़ूर, उठिये, सवेरे की नमाज़ का वक्त हो गया है।" उसे उसने उठाया।

अबू ने चादर तानकर यों कहा—"अरे! भूत मुझे न उठाओ।"

"मैं भूत नहीं हूँ। मैं हुज़ूर की दासी हूँ; गन्ना।"—गन्ना ने कहा। चादर फेंककर अबू ने चारों तरफ़

देखा। दासियाँ वहीं खड़ी थीं। उसने गन्ना की ओर देखकर कहा—"मेरी अँगुली काट।" उसने उसकी अँगुली खूब ज़ोर से काटी। दर्द के मारे अबू चिल्लाने लगा—"स्वप्न नहीं है, सच है, मैं खलीफ़ा हूँ।" उसके साथ दासियाँ भी चिल्लाती हँसने लगीं।

इतने में पेट पर हाथ रख अट्टहास करता खलीफ़ा उस तरफ़ आया। दासियाँ हँसना छोड़, चुपचाप मूर्ति की तरह खड़ी हो गईं।

"अरे! तू यहाँ भी आ पहुँचा? तेरी ही बदौलत मुझ पर फिर यह आफ़त आ पड़ी है।" खलीफ़ा को देखकर अबू ने कहा।

खलीफ़ा ने उसको गले लगाते हुए कहा—"इस बार आफ़त नहीं, तुमको अपने परिवार में रख, जो कुछ तुमको चाहिये, वह दूँगा।"

अबू को तब मालूम हुआ कि वह खलीफ़ा है, उसको वे ही दो बार वहाँ लाये थे। उसने खलीफ़ा को सलाम करके कहा—"मुझे सिवाय आपकी मेहरबानी के और कुछ नहीं चाहिये।"

"मुझे तुम जैसे निरीह व्यक्तियों का स्नेह चाहिये। आज से राजमहल में तुम्हारे लिये भी एक कमरा रहेगा। अब से तुम्हारे लिए, राजमहल में आने-जाने के लिये या मेरे कमरे में आने के लिये, या रानी जुबेदा के कमरे में जाने के लिये किसी के हुकुम की ज़रूरत न होगी।"—खलीफ़ा ने कहा।

उसने अबू को दस हज़ार दीनारें दीं। क्योंकि दरबार का वक्त हो गया था; इसलिये खलीफ़ा चला गया।

अबू खुशी खुशी घर गया। उसने अपनी माँ को सारा हाल कह सुनाया। वह बड़ी सन्तुष्ट हुई। उसको यह वचन देकर कि रोज़ वह उसे देखने आया करेगा, वह राजमहल में चला गया।

समाचार वगैरह

प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने संसद के हिन्दी एसोसिएशन के चतुर्थ वार्षिकोत्सव में अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए कहा कि किसी भी राष्ट्रभाषा को प्रभावशाली बनने के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी क्षेत्रीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करे। तभी वह भाषा अधिक शक्तिशाली, सजीव और मधुर हो सकती है।

*　　*　　*

बम्बई के राज्यपाल डा० हरेकृष्ण मेहताब ने बुद्ध परिनिर्वाण तिथि समारोह के एक सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बुद्ध ने प्रेम और दया का सन्देश देकर आशा और सौजन्य को जन्म दिया। बुद्ध के उपदेशों में जन साधारण और राष्ट्र की समस्याओं का हल है। बुद्ध के उपदेशों में पंचशील हैं।

*　　*　　*

कहा जाता है कि अगहर बुलन्द नामक ग्राम में एक ३२ वर्षीया ब्राह्मण विधवा ने अपने सवा वर्ष के बालक की गँडासा से मारकर काली जी पर बलि चढ़ा दी। उस स्त्री ने रात में स्वप्न देखा था कि काली जी ने

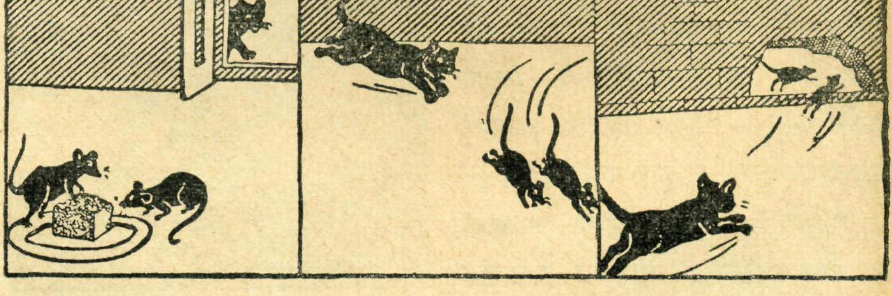

उससे उसके पुत्र का बलिदान माँगा था। दूसरे दिन गाँववालों ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया।

* * *

समाचार पत्रों की एक वार्ता से यह मालूम हुआ कि बिहार राज्य के प्रत्येक ज़िले में टेक्नीकल स्कूल खोलने का आयोजन राज्य सरकार ने किया है। कोड़रमा, धनबाद और गया में इस तरह के स्कूल खोलने का निश्चय हो चुका है।

* * *

समाज शिक्ष केन्द्र, मढ़ौड़ा (सारल) द्वारा ९ मई से 'हस्ताक्षर आन्दोलन' सिल्हौड़ी मेला के अवसर पर प्रारंभ करने का निश्चय किया गया है, जिसमें १५ मिनट में वयस्कों को केवल नाम लिखाना सिखलाया जायगा।

जनता के लिए मनोरंजन कार्यक्रम करनेवाली सस्थाओं को बम्बई सरकार की तरफ़ से पहले की तरह आर्थिक सहायता मिलती रहेगी। सरकार ने इस के लिए ६० हज़ार रुपया आयत्त रखा है।

* * *

ज्ञात हुआ कि पूर्वी बर्लिन में होनेवाली भारतीय उद्योग प्रदर्शनी इतनी लोकप्रिय वहाँ हो गयी है कि इसकी अवधि दो सप्ताह और बढ़ा दी गयी है।

* * *

उज़बेक सोवियत सामाजवादी जनतंत्र की राजधानी ताशकंत में कुरान का एक नूतन संस्करण तैयार किया गया है। मध्य एशिया एवं कज़ख़स्तान का मुस्लिम धार्मिक बोर्ड शीघ्र ही एक धार्मिक मुस्लिम पंचांग प्रकाशित करने का विचार कर रहा है।

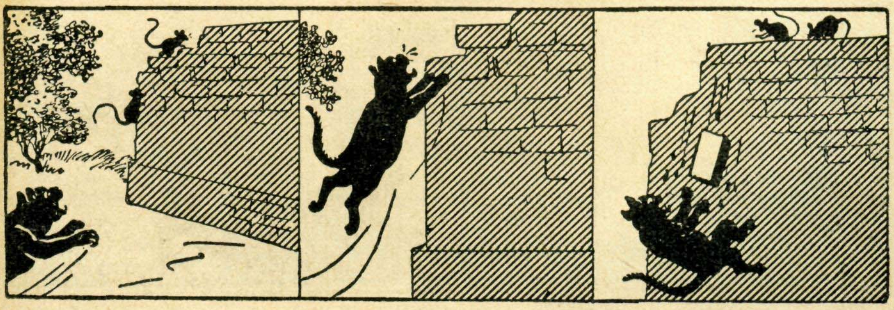

चित्र - कथा

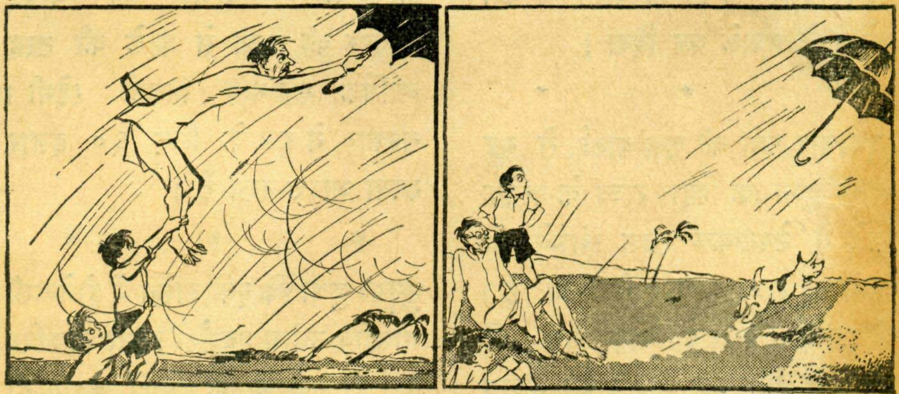

एक दिन शाम को दास और वास सैर के लिए निकले। साथ में 'टाइगर' भी था! उनके आगे छाता खोलकर गाँव के बूढ़े अध्यापक जी जा रहे थे। इतने में बड़े ज़ोर की हवा चली, तो छतरी के साथ बूढ़े अध्यापक जी भी ऊपर उठे! दास दौड़ा दौड़ा गया और अध्यापक जी के पैर थाम लिये। वास ने दास को पकड़ लिया। पर अध्यापक जी की छतरी हवा में उड़ते हुए बहुत दूर जा गिरी! 'टाइगर' दौड़कर उसे ले आया। अध्यापक जी दास और वास की प्रशंसा करने के बदले 'टाइगर' की बड़ी सराहना की।

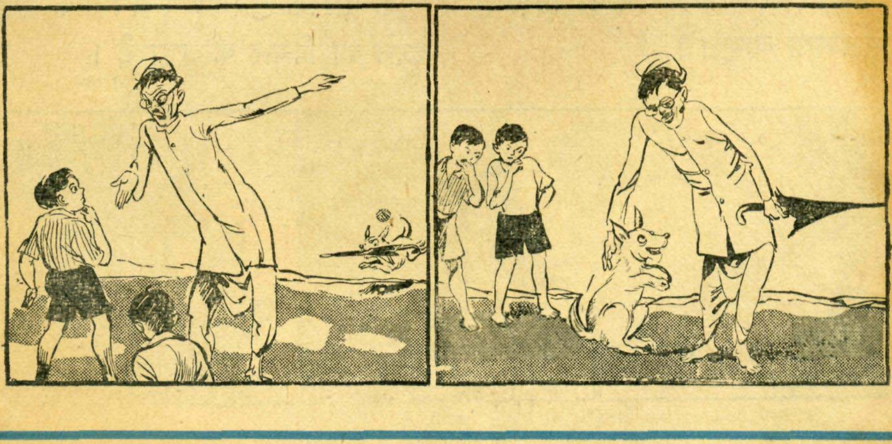

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press (Private) Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

" चम चमकीला मेरा माथ ! "

प्रेषक :
श्री ललन प्रसाद सिंह, जमशेदपुर

रंगीन चित्र-कथा चित्र – ६